गैरहर्त हाउप्तमन

एक परिचय

मक्स म्युलर भवन प्रकाशन

गैरहर्त हाउप्तमन

एक परिचय

अनुवाद : संयुक्ता
निरीक्षण : रामानन्द 'दोषी'

मूल मानवीय संवेदनाएँ सार्वभौम और शाश्वत हैं, देश और काल की सीमाएँ उन के आड़े नहीं आतीं---यह प्रतीति किसी भी रचना के श्रेष्ठत्व का पर्याप्त प्रमाण है। इस कसौटी पर खरे उतरने वाले लेखक सदैव और सर्वत्र समादृत होते हैं। गैरहर्त हाउप्तमन ऐसे ही समर्थ रचनाकार हैं। अनुभूति उन की तीव्र है, पैठ उन की गहरी है और अभिव्यक्ति उन की सहज है। लेकिन इन से भी परे उन की अपनी विशेषता है—प्रकृति के आलम्बन से अपने भाव-चित्रों में अनुकूल रंग भरने की अद्भुत क्षमता। मुझे प्रसन्नता है कि मक्स म्युलर भवन के सत्प्रयासों के फलस्वरूप हिन्दी-पाठकों का परिचय ऐसे मान्य लेखक की एक भावभीनी कृति से हो रहा है।

दो शब्द अनुवाद के सम्बन्ध में भी।

महान कृतियों का अनुवाद सदा ही एक कठिन कार्य रहा है। भाषागत संस्कार की बात बीच में आती है, मूल लेखक के प्रति ईमानदारी की बात बीच में आती है और बात बीच में आती है अनुवाद की प्रेषणीयता की। इस तिहरे दायित्व का निर्वाह प्रस्तुत अनुवाद में हुआ है---यह सन्तोष की बात है।

मुझे विश्वास है हिन्दी-जगत इस कृति को स्नेह से अपनायेगा।

रामानन्द दोषी

अनुक्रम

व्यक्ति

कृति

डो वेबर

पाँचवाँ अंक

(वृद्ध जुलाहे हिल्ज़े का आत्म-कथन)

वृद्ध हिल्ज़े काम छोड़ कर उठता है—गंभीरता से : गॉटलीप ! तोहार मेहेरिया अस बतियाँ हम लोगन का कहेस । गॉटलीप ! एहर निहार । (अपना सीना खोल कर) इहाँ धँसी रहै गोली । छल्ला के बरोबर । और राजा जानत अहैं—मोर बाँह कहाँ हिरानी रहै ? ओका मूसु नहीं खाइ गवा (**चहलक़दमी करता है**) तोहार मेहेरिया......जब ओकर धियानौ न आवा रहै, तब देस के नीतिन अपन हँड़िया-हँड़िया रकत बहावा । तौने ते ऊ जेतना उबला चहै, उबलै । हम का सबै बरोबर अहै, सबै ठीकै अहै । मोरे ऊपर कौनो परभाव ना पड़ो । डेरइहौं ? मैं डेरइहौं ? काहे ते डेरइहौं ? हम का बताव । उन फौजिन ते जौन दंगइन के पाछे दौरत होइहैं ? हे ईसुर ! जब यहै बात आय, तबै कुच्छु न होय पाइ । मोरे हाड़ जज्जरौ होइ जैहैं, तौने पर बखत आय पड़ी तो लोहा केर होइ जैहैं । ई थोर-सी संगीनन के आगे ना हिचकिचैहौं, ना डेरइहौं । भले खराब ते खराब बखत आ जाय । ओः ! आराम पाइ कै केतना सुख होइ । सच्चौ मिर्तु ते मैं ना डेरइहौं । कल आवै का होय तो आजै आ जाय, ओकरे नीतिन दुवार खुला अहै । ना, ना, ई भल होइ । हम केकरे खातिर जियब । हमरे जज्जर दुखी सरीर के नीतिन कौनो रोवइया नाहीं न । डेर दरद कै खजाना औ गोलामी कै जिन्दगी का पाछे छाँड़ि देइहौं ।

पर ओकरे बाद ? गॉटलीप ! ओकरे बादौ कुच्छु अहै । ओहिका तुम भिकि देइहौ, तहिले सबै कुछ चला जाइ ।

मैं तो का बतावत हौं, गॉटलीप गरीबन के तीर यहै एक खजाना अहै—ओपर सक-सुभा ना करा चही । मैं काहे इहाँ बैठ रह्यों औ मसीन की तनिहाँ चालिस बरस गोलामी करत रह्यों । चुप्पी साधे देखन रह्यों, कौने तनिहाँ ऊ गरवते रहत रहा ग्रौर खूब खात-पियत रहा, और मोहिका भूखन मारि कै ग्रौर मुसीबत माँ डारि कै रकम कमात रहा । ग्रौर काहे का ! काहे कि मोरे मन माँ आसा ग्रहै । दुर्दसा के बादौ मोरे तीर कछु अहै । (**खिड़की के बाहर इशारा करके**) इहाँ मैं अहौं, एही दुनियाँ माँ तोरे भाग का बचा ग्रहौं । मैं बरोबर यहै सोचत रह्यों ग्रपनका मिटाय देइहौं, चार हीसन माँ बाँटि देइहौं । ई पक्का अहै । हम लोगन का वाचा दीन गै रहै, नियाव कै दिन ग्रावत ग्रहै, मुला नियाव करैया तो हम नाहीं न । भगवान कहेन ग्रहैं—सजा तो मोर काम अहै ।

श्रद्धांजलि

कोई बीस वर्ष हुए होंगे। साइलीशिया की राजधानी ब्रेसलाउ में कुछ छात्र अपने अध्यापक के साथ जर्मन इतिहास से संबंधित एक प्रदर्शिनी देखने गये। लेकिन जर्मनी उस समय अपने सर्वाधिक अंधकारपूर्ण युग से गुज़र रहा था। प्रदर्शिनी का नाम रखा गया था 'जर्मनी की महानता'। प्रदर्शिनी के नामकरण में शब्दों के इस आडम्बर को छात्र खूब समझते थे और जानते थे कि वहाँ भी उन्हें कक्षा सरीखी नीरसता का और देशभक्ति की उन्हीं लंबी-चौड़ी खोखली बातों का ही सामना करना पड़ेगा। हुआ भी यही। उन्होंने धैर्यपूर्वक उस चक्रव्यूहाकार प्रदर्शिनी का चक्कर लगाया, लेकिन जब वे बाहर जाने के लिए द्वार पर पहुँचे तो देखा कि प्रदर्शिनी में लोगों का प्रवेश बन्द कर दिया गया है। कारण पूछने पर पता चला कि इस बीच प्रसिद्ध नाटककार गैरहर्त हाउप्तमन अपनी पत्नी तथा कई राजनीतिक बड़े नेताओं के साथ वहाँ आ गये थे। वे सुविधापूर्वक उछीड़ में प्रदर्शिनी देख सकें, इसीलिए बाहर की भीड़ को अन्दर आने से रोक दिया गया था। लड़के तो आख़िर लड़के—उन्हें इन सब अदब-क़ायदों से क्या लेनादेना। उन्होंने बजाय बाहर जाने के प्रदर्शिनी का एक और चक्कर लगाना शुरू कर दिया, ताकि इस प्रकार वे 'उस के' पास तक पहुँच सकें। उन्होंने सोचा कि यही मौक़ा है जबकि वे जर्मनी की महानता का दिग्दर्शन कराने वाले उस कलाकार को आमने-सामने देख सकेंगे। वे तेज़ क़दमों से बढ़ चले। अब तक तो

अध्यापक ही उन्हें घसीट कर प्रदर्शिनी दिखा रहा था, अब वे अध्यापक को घसीट कर आगे लपके जा रहे थे। आख़िर एक बड़े कक्ष में, जो साधारण दर्शकों से ख़ाली था, उन्हें हाउप्तमन के दर्शन हुए। भूरी और स्याहीमायल वर्दियाँ पहने अपने साथियों के बीच किसी मीनार की तरह खड़े सफ़ेद बालों वाले लम्बे हाउप्तमन ऐसे लग रहे थे जैसे झुके सरपतों के बीच कोई विशाल बलूत वृक्ष। विशालता और साथ ही आसन्न विनाश, मानवेतर शक्ति और साथ ही अत्यधिक भेद्यता के ये प्रतीक--- जलती मीनार और दानवाकार बलूत---गैरहर्त हाउप्तमन के समूचे व्यक्तित्व को, उन के अन्दर के मनुष्य एवं कलाकार को संभवतः सर्वाधिक सफल रूप से चित्रित करते हैं। लगभग डेढ़ शताब्दी पूर्व HEINRICH VON KLEIST नामक नाटककार ने लिखा था---

निष्प्राण बलूत तूफ़ान को सह लेता है
जब कि तन कर खड़े बलूत को तूफ़ान धराशायी कर देता है
क्योंकि उस समय बिना प्रयास के ही उस की चोटी तूफ़ान की पकड़ में आ जाती है

लेकिन उस समय वे लड़के बड़प्पन की पीड़ा को क्या समझते और वास्तव में उसे समझने की उन्हें ज़रूरत भी क्या थी? अपने घबराये हुए अध्यापक को एक खंभे के पीछे कसमसाता छोड़ वे साहसपूर्वक आगे बढ़े ओर रोमन ढंग से विनम्र नमस्कार करके हाउप्तमन से हस्ताक्षर माँग बैठे। इस से वातावरण का संत्रस्त हो उठना स्वाभाविक था। क्योंकि इस कांड से हुई अव्यवस्था के अतिरिक्त एक बात और भी थी, उस समय उस स्थान पर तृतीय रीख के कुछ क्षणजीवी विशिष्ट पदाधिकारी भी उपस्थित थे। भला, इन उद्दंड छोकरों की, जिन्हें हिटलरी पाठ याद

नहीं था, यह हिम्मत कैसे हुई कि उन पदाधिकारियों की उपेक्षा करके उन्होंने एक नाटककार से हस्ताक्षर माँगे ? बेचैनी और अनिश्चय के उस क्षण में विशालकाय हाउप्तमन ने पास खड़ी नाज़ुक-सी अपनी पत्नी की ओर विवशतापूर्ण नेत्रों से देखा। पत्नी से प्रोत्साहनपूर्ण स्वीकृति पा कर उन्होंने एक कापी से जल्दी से एक पन्ना फाड़ा और उस पर (मिखाएल क्रामर) MICHAEL KRAMER से एक वाक्य लिख दिया : KUNST IST RELIGION। उन चौदह-चौदह वर्ष के बालकों को हाउप्तमन ने बताया कि कला ही धर्म है।

गैरहर्त हाउप्तमन का जन्म १५ नवम्बर, १८६२ को हुआ था और इस समय वे लगभग ८० वर्ष के भव्य वृद्ध थे, हालाँकि यह काल उन की ख्याति का शिखर न था। जब १९१२ में उन्हें 'दि वीवर्स' के लिए नोबल पुरस्कार मिला था, वे अपना पचासवाँ वर्ष पार कर आये थे। सामाजिक संघर्ष के इस नाटक ने तथा दो-तीन अन्य नाटकों ने हाउप्तमन को उन के जीवनकाल में ही प्रथम श्रेणी के नाटककार के रूप में स्थापित कर दिया था। वे अपना सत्तरवाँ वर्ष भी पार कर आये थे जब कि १९३२ में उन्होंने गेटे के बहुमान्य उत्तराधिकारी और जर्मन साहित्यकारों के प्रतिनिधि के रूप में गेटे-शती का उद्घाटन करने के लिए अमरीका की यात्रा की थी। लेकिन अब भाग्य ने उन के लिए कुछ और ही रच रखा था। फ़रवरी १९४५ में शत्रु के विमानों द्वारा उन्हें अपने प्रिय ड्रेसडन का नाश देखना था (उस के वे प्रत्यक्ष-दर्शी थे) और देखनी थी जरमनी की पराजय और साइलीशिया प्रान्त का उस से पार्थक्य। हाउप्तमन ने साइलीशिया में अग्नेटनडॉर्फ स्थित अपना मकान वीज़नश्टाइन त्यागने से इनकार कर दिया और बीते युग के एकमात्र अवशेष के रूप में ६ जून, १९४६ को वहीं उन की

मृत्यु हुई। अपने अन्तिम पत्र में उन्होंने लिखा था—लोग जिसे प्रसन्नता कहते हैं, वह मेरे बाँटे नहीं आयी है। प्रकृति में अधिकतर जो घटित होता रहता है, उस के कारण, वह मुझे अरुचिकर प्रतीत होती है।

अगस्त १९४२ में जब लोठार टंक वीज़नश्टाइन गये तो उन्होंने देखा कि ८० वर्षीय हाउप्तमन नगर के शौक़िया कलाकारों की सहायता से ड्रेमन हैंशल नाटक के मंचीकरण में व्यस्त थे। हाउप्तमन ने टंक को बताया था कि शौक़िया अभिनेताओं द्वारा इस नाटक का मंचीकरण उन के लिए एक परीक्षा के समान है। उन्होंने भविष्यवाणी करते हुए कहा, "सोचो तो, एक समय ऐसा आ सकता है, जब साइलीशिया न रहे। यह शानदार प्रान्त लुप्त हो जाये। लेकिन उस समय भी संसार में कुछ साइलीशियन कहीं बचे हों और उन के हाथ यह नाटक आ जाय और वे इसे अभिनीत करना चाहें। उस स्थिति की कल्पना तो करो ज़रा। क्या मैं इस परीक्षा में खरा उतरूँगा ?"

क्या वह इस परीक्षा में खरे उतरेंगे ? संसार में कहीं और की बात जानें दें, इसी नगर में क्यों नहीं। गैरहर्त हाउप्तमन के नाटक, जिन में से अधिकांश के विविध भाषाओं में सुन्दर अनुवाद हो चुके हैं, किसी भी शौक़िया अथवा पेशेवर थियेटर के लिए स्थायी चुनौती हैं। और मैं समझता हूँ कुछ साइलीशियन यहाँ भी हैं।

इस चर्चा के सम्बन्ध में अपनी व्यक्तिगत ढंग की पैठ के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ, हालाँकि मुझे संदेह है कि गैरहर्त हाउप्तमन के बारे में कोई भी चर्चा व्यक्तिगत पैठ के अतिरिक्त किसी भी दूसरे ढंग से हो पायेगी। ऐसा न होता तो भला उन के समीक्षकों में एक ओर उन पर 'गंदगी लिपटी प्रतिभा' सरीखे नितान्त फूहड़ आरोप लगाने वालों से ले कर

हाइनरिख़ मन सरीखे प्रबल प्रशंसक क्यों होते। हाइनरिख़ मन ने लिखा है : 'हाउप्तमन जर्मनी के हृदय पर शासन करते हैं। उन के कारण यह रिपब्लिक अपने को सम्पुष्ट और उन्नत मानती है।'

गॉटफ्रीड बेन सरीखे कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हाउप्तमन की कृतियों की अपेक्षा उन के व्यक्तित्व से अधिक प्रभावित हैं। बेन ने १९३२ में एक पत्र में लिखा था : 'मैं ने कल जीवन में पहली बार उन्हें अकादमी के जलपान समारोह में देखा। सुन कर आप हँसेंगे, मैं ने उन्हें आडम्बरी पाया। कम से कम जहाँ तक उन के बाहरी रूप का संबंध है—डीलडौल को लीजिए, उन की सजधज को लीजिए—वहाँ तक उस में वैसी कोई अस्पष्टता नहीं है जैसी प्रायः उन के लेखन में मिलती है।'

इन सब उद्गारों में—वे चाहे पक्ष में हों या विपक्ष में—एक बात समान है : इन में अनात्म्य नही है, एक रागात्मकता है; ये उद्गार सद्य प्रेरित हैं, सुविचारित नहीं; ये हृदय से निकले हैं, मस्तिष्क से नहीं। परन्तु हाउप्तमन-साहित्य के बारे में सर्वाधिक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक देन है हाइनरिख़ मन के भाई थामस की, जो सृजनशील लेखक की हैसियत से हाउप्तमन का बिल्कुल विपर्यय था, विशेषतया १९५२ के एक स्मरणीय भाषण के रूप में और जादू का पहाड़ DER FAUBERBERG में उस के द्वारा माइनहेर पेपरकॉर्न के चित्रण में।

"कोट का कॉलर खड़ा किये, अपने हैट को पास ही ज़मीन पर रखे, पेपरकॉर्न बैठा हुआ एक चाँदी के प्याले से, जिसे वह कई बार ख़ाली कर चुका था, पोर्ट शराब पी रहा था। एकाएक उस ने भाषण देना शुरू कर दिया। अजीब असाधारण व्यक्ति ! स्वयं उसी को अपनी

आवाज़ सुनाई पड़नी असंभव थी। दूसरों के लिए तो उस का एक अक्षर भी पकड़ पाना नितान्त असंभव था। शराब का प्याला थामे दाहिने हाथ की तर्जनी उठा कर उस ने अपनी बायीं भुजा, जिस की हथेली परे जल की ओर थी, फैला दी। श्रोताओं ने लक्ष्य किया—उस का भव्य राजसी चेहरा जो बोलते वक़्त और भी मोहक रूप में हिल रहा था, उस के होंठ जिन से ध्वनिविहीन शब्द यों निकल रहे थे मानो वे किसी अनन्त रिक्त शून्य में बोले जा रहे हों। श्रोताओं में से किसी को स्वप्न में भी यह उम्मीद नहीं थी कि वह इस तरह बोलता ही चला जायेगा। वे बराबर यही सोच रहे थे कि वह अब चुप हो। वे सभी परेशान-से मुस्कराते हुए उस के अर्थहीन क्रियाकलाप को देख रहे थे। लेकिन वह अपनी तनी हुई ज़बर्दस्त भावभंगिमा के साथ बराबर उस भयानक रव को, जो उस के शब्दों को लीले ले रहा था, और भी जोश से भाषण दिये जा रहा था। पीली छोटी-छोटी थकी आँखों को, जो उठी हुई कुंचित भौंहों के नीचे यहाँ से वहाँ तक फैली हुई मालूम देती थीं, अपने आस-पास के लोगों पर बारी-बारी से स्थिर कर के वह बोल रहा था, और जिस को भी लक्ष्य कर के वह बोलता, वह जैसे स्वीकृति-सूचक सिर हिलाने के लिए बाध्य हो जाता। उस की आँखें फटी रह जातीं, मुँह खुला रह जाता और वह इस तरह से कान पर हाथ रख लेता मानो ठीक-ठीक सुनने का प्रयत्न करके वह बिल्कुल ही बिगड़ी उस परिस्थिति को सुधार लेगा। फिर एड़ियों तक झूलते अपने चुन्नटदार लबादे का कॉलर उठाये पेपरकॉर्न खड़ा हो गया—हाथ में प्याला पकड़े, एकदम नंगे सिर, उठी हुई कुंचित भौंहें—जैसे किसी मंदिर में जंगलियों के देवता की कोई मूर्ति हो—श्वेतकेशों की प्रकाश-आभा से मंडित, प्रकाश की चिनगारियाँ फेंकती हुई चट्टानों के पास खड़ा हो कर अपने चेहरे के सामने

तर्जनी और अँगूठे से बनाये दायरे के ऊपर बाक़ी उँगलियों को बर्छों की तरह फैलाये वह बोल रहा था और फिर उस ने एक ज़ोरदार संकेत के साथ अपना ध्वनिहीन और अव्यक्त भाषण समाप्त कर दिया। पेपरकॉर्न के होठों या उस की भव्य भावभंगिमा से श्रोतागण 'निश्चय ही' या 'बिल्कुल ही'—जैसे वे शब्द अवश्य पढ़ रहे थे, जिन्हें वे उस के मुँह से सुनने के आदी हो चुके थे। लेकिन बस, इतना ही। इस के बाद उन्होंने देखा—एक ओर झुका हुआ उस का सिर, होठों पर एक दुखभरा चिड़चिड़ापन। वहाँ उन के सामने अपनी उस विराटता के कवच में छिपा एक दुखी और आहत मनुष्य खड़ा था। लेकिन फिर तभी एकाएक उसके गालों के गढ़े चमक उठे, वही विलासप्रिय अशिष्टता, नृत्यमुद्रा में वस्त्र ऊपर को उठ गया, उस जंगली देवता के सभी असभ्य संस्कार फिर उतने ही तीव्र वेग से लौट आये। उस ने अपना प्याला उठा कर एकत्र अतिथियों के सामने, अर्द्ध-गोलाकार घुमाया और तीन ही घूँट में सारी शराब इस तरह गटक गया कि पेंदा एकदम ऊपर को उठ गया। फिर बाँह फैलाते हुए उस ने प्याला मलय को थमा दिया जिस ने उसे अदब से झुक कर पकड़ लिया, और इशारा किया कि दावत ख़त्म हुई।"

कम से कम पहली दृष्टि में, यह एक व्यंग्य-चित्रण से अधिक कुछ नहीं लगता। लेकिन कलात्मक आयामों वाले किसी भी व्यंग्य-चित्रण की भाँति इस में पैनी आलोचना के साथ-साथ अपने पात्र के प्रति, यदि स्नेह नहीं तो गहरी सहानुभूति अवश्य है। सन् १९२४ की गर्मियों में बाल्टिक सागर स्थित, एक छोटे-से द्वीप हिडेन्सी में थॉमस मॉन और गैरहर्त हाउप्तमन साथ-साथ एक ही मकान में रहते थे। 'मैजिक माउण्टेन' का प्रकाशन उसी वर्ष हुआ था। मीज्नहीर पेपरकॉर्न-जैसे चरित्र की रचना करते समय, उपन्यासकार पर हाउप्तमन के व्यक्तित्व

का तात्कालिक प्रभाव निश्चय ही रहा होगा। चिग्घाड़ते हुए जलप्रपात पर गरजता हुआ शैतान—कितनी भव्य कल्पना है, और अपने गूढ़ार्थ में कितनी सम्पन्न !

सर्वप्रथम जो वस्तु हमारा ध्यान आकर्षित करती है—वह है इस दृश्य की अत्यन्त नाटकीय कृत्रिमता। वास्तव में हाउप्तमन के संपूर्ण चरित्र में एक नाटकीय कृत्रिमता—एक ऐसी सजगता मानो वे दर्शक-श्रोताओं के सामने हों—सर्वत्र परिलक्षित होती है। इस कोण से देखने पर उन के द्वारा गेटे का अनुकरण (जिन्हें वे एक समादरपूर्ण आत्मीयता के रूप में अपना—OBERKOLLEGE—अग्रज सहकर्मी कहा करते थे) अथवा मृत्यु के बाद फ्रैन्सिसकन मतानुयायी मठ में दफ़नाये जाने की उन की विशिष्ट इच्छा—ये सभी नाटकीय कृत्रिमता की भव्य मुद्राएँ लगती हैं। लेकिन वास्तव में ये सभी हैं शानदार मुद्राएँ। गेटे की ही तरह हाउप्तमन ने भी जीवन को कला संरचना के रूप में ढाल देने का प्रयत्न किया, किन्तु जहाँ गेटे को इस में सफलता प्राप्त हुई, वहाँ हाउप्तमन का सारा लम्बा जीवन, अपनी आत्मा के नाटक के लिए उच्च आयामों वाले गौण दृश्यों की योजना में ही खप गया। रोम, ड्रेसडेन और हिडेन्सी तीनों की गिनती उन्हीं में है। हाउप्तमन की अधिकांश व्यक्तिगत विडम्बना का उद्‌भव उन के अन्दर कलाकार की अहम्मन्यता से हुआ है—कलाकार, जिस का अस्तित्व लोक-स्वीकृति सापेक्ष है : यही कारण है कि जब-तब वह इतने निस्सहाय लगते है, इतने भेद्य हैं। यदि हाउप्तमन, कम-से-कम जन-नायक के रूप में, नाज़ी व्यवस्था की चापलूसी को नहीं ठुकरा पाये, तो उन की इस बाहरी कमजोरी का कारण भी यही है कि एक प्रवासी के रूप में उन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। उन के जैसे व्यक्ति के लिए, जो अस्सी का होने आया हो, इस बात के

प्रति आश्वस्त होना कठिन ही था कि जर्मनी के बाहर उन्हें तत्काल ही लोक-स्वीकृति मिल जायेगी। और यह लोक-स्वीकृति ही उन का प्राण थी।

थॉमस मन ने पेपरकॉर्न के प्रलाप के लिए जो प्राकृतिक, एक प्रकार की आदिकालिक (URLANDSCHAFT) पृष्ठभूमि चुनी है उस का महत्व एक अन्य कारण से भी है। हाउप्तमन की कृतियों में बर्लीन की गंदी बस्तियों के धुंधले प्रकोष्ठों तक में, प्रकृति सर्वत्र विद्यमान है। प्रकृति अपनी समस्त क्रूरता के साथ, प्रकृति अपनी सारी मासूमियत और मिठास के साथ। आदमी को उन्होंने प्रकृति के एक अंग के रूप में ही देखा है—यही उन की महानता भी है। और यही उन की परिमितता भी है। हाउप्तमन की दृष्टि में कलाकृति एक प्राणवान रचना के समान है : वह उगेगी, फूले-फलेगी और फिर उस का स्वाभाविक अन्त हो जायेगा। कलाकार को इस में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

हाउप्तमन ने स्वयं अपने एक नाटक को FREILUFTPRODUKT—खुला रंगमंचीय नाटक, कहा है। भारतीय ड्रामा के प्राकृतिक सौंदर्य से गहरे प्रभावित हो कर उन्होंने कहा, "भारतीय ड्रामा का अमृत्व, पुष्पगन्ध, मृदुल ऐश्वर्यमयी प्रकृति मेरे वास्तविक व्यक्तित्व के अनुरूप है।" और इस के बाद उन की यह अत्यन्त निराशामय उक्ति, "प्रकृति मुझे अरुचिकर है..."

कर्ट लोथर टैंक ने उन के साथ हुए एक अन्य वार्तालाप का ज़िक्र किया है जो इस संबंध में प्रचुर प्रकाश डालता है : एक दिन हाउप्तमन वीसेन्सटीन से साइलीशियन पर्वतों के ढलानी जंगलों, खेतों और चरागाहों को देख रहे थे कि उन्होंने आसपास के ग्रामीण प्रदेश की

 ओर इशारा कर के कहा, "देखो न, यहाँ कृषि छोड़ और कोई उत्कर्ष

नही है" और फिर मुस्करा कर बोले, "लेकिन, आखिर कृषि ही तो समस्त आध्यात्मिक जीवन का श्रीगणेश है।"

हाउप्तमन के प्रकृति-सामीप्य का यह केवल एक पक्ष है कि वह पूरी तरह HEIMATDICHTER (प्रान्तीय कवि) थे, बलूत की जड़ें अपनी मिट्टी में गहरी जमी थीं। "इस प्रकार हम प्रकृति, वसन्त और यौवन के मद में श्रीबरहाउ की घाटियों में, जो हमें स्वर्ग समान लग रही थी, उतर गये। अचानक हम ने अपने को भूमि के एक ऐसे टुकड़े पर पाया जिस ने हमें प्रसनता से भर दिया। मैं ने उसे खरीद लिया—वह टुकड़ा मेरा हो गया। इस प्रकार मैं ने और मेरे भाई ने एक बार फिर साइलीशिया की भूमि में अपनी जड़ जमा ली।" हाउप्तमन आगे लिखते हैं, "और आज मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मेरे जीवन के अस्सी वर्षों में मेरे लिए ये पर्वत इस संसार के अन्दर वास्तविक संसार हो गये। सच्चे अस्तित्व और आनद की दृष्टि से, जीवन का बोध मुझे यहीं हुआ। यही क्यों, इस परिप्रेक्ष्य में जो न देखा जा सकता था, उसे मैं ने देखना ही न चाहा।"

हाउप्तमन ने, जैसा कि रूडोल्फ़ अलेक्जेंडर श्रोयडर ने १६३७ में कहा था, साइलीशिया को, उस शानदार प्रान्त को जो अब साइलीशयनों की पहुँच के बाहर है, एक GEISTIGE PROVINZ (आध्यात्मिक प्रदेश) बना डाला है, कुछ-कुछ शेक्सपियर के आर्डन वन, लेरमोन्टोव के काकेशस, फ़ोण्टेन के बर्लीन और उस के चारों ओर के मार्क ब्रेडेनबर्ग तथा—आप की अनुमति से एक ताज़ा उदाहरण दूं—गुथंर ग्रास के डेंज़िग की भाँति। आध्यात्मिक प्रदेश : अर्थात् भौगोलिक सीमा-निरपेक्ष सांस्कृतिक समानता के एक ऐसे क्षेत्र का काव्यात्मक पुनर्सृजन जो समूचे विश्व का

प्रतिनिधित्व कर सके; अथवा : स्थानीकरण एवं कलात्मक ग्रात्म-संयम द्वारा व्यापकता और विश्वजनीनता।

अब हम पुन: मिज्नहीर पेपरकॉर्न को लें : वह वहाँ खड़ा व्यग्रतापूर्ण हाव-भावों से गूढ़तम विचारों को, सुन्दरतम कल्पनाओं को श्रोताओं पर प्रकट करने का प्रयत्न कर रहा है, लेकिन वह जो कुछ भी कह रहा है उसे प्रपात की गर्जना लीले ले रही है। यह एक आश्चर्य की बात है कि हाउप्तमन के कवि में अस्पष्ट रहने या कम-से-कम अर्ध-स्पष्ट रहने की प्रवृत्ति है। उन के कवि में, और यह बड़ा असंगत प्रतीत होता है, नीरक्षीर की, या यों कहें तो बेहतर होगा कि साक्षर-पूर्वता की झलक है; वह एक ऐसा कवि है जिस का कम-से-कम एक पाँव मानव-वाणी के उस प्रारम्भिक क्षेत्र में जमा है जहां बूढ़ा अपने एकत्र उल्लास को 'जुमलाई' की एक लम्बी ग्रादिम चीख़ से व्यक्त करता है; कवि अपने मानस चक्षुओं से जो कुछ देखता है उस का अधिकांश स्पष्ट अभिव्यक्ति की सीमा से बाहर अधकहा, ग्रांशिक, पत्थर की आधीतराशी मूर्ति-सा रह जाता है। कुछ व्यक्तियों ने जो जब-तब हाउप्तमन के निकट सम्पर्क में ग्राये, बताया है कि वे बातचीत में अपने को किस प्रकार व्यक्त करते थे : उन की सेक्रेटरी एरहार्ट केस्टनर के अनुसार वे 'जैसे नशे के झटके में, जोशीली और जानबूझ कर अधकही बातें करते थे'। कर्ट लोथर टैंक ने बताया है कि कैसे उन के वाक्य प्राय: कटे हुए, प्राय: फिर से सुधारे हुए, अक्सर UND SO WEITER, UND SO WEITER (ग्रादि-आदि) में लुप्त हो जाया करते थे। थामस मन भी, जैसा कि हम देख ही चुके हैं, उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानता था, और वह अवश्य ही इस बात से स्तम्भित हुग्रा होगा : यदि 'जोसेफ़' ग्रौर 'फ़ेलिक्स क्रल' का लेखक हमारे युग का संभवत: सर्वाधिक शब्द-चेता

ग्रौर शब्द-ग्रभिभूत लेखक है, जिस की दृष्टि में मनुष्य सर्वप्रथम एक प्रांजल प्राणी है और भाषा पर सर्वोच्च ग्रधिकार ही सर्वोच्च मानवता है—तो गैरहर्त हाउप्तमन एक मूर्तिकार-कवि का ग्रादर्श रूप हैं। उन्होंने जो वर्ष (१८८३-८४) इटली में (जहाँ वह बाद में IL POETA CLASSICO अलौकिक कवि और IL POETA ETNA—एटना पर्वत सदृश कवि कहलाए) मूर्तिकार की हैसियत से बिताया था और जिस में वे यौवन-दर्प में करारा के पर्वतों में से अपनी महानता की यादगार उत्कीर्ण करना चाहते थे, वह वर्ष निश्चित ही एक समीपी-कला की ग्रोर अल्पकालिक उन्मुखता से अधिक महत्व रखता है : सारा जीवन यह संसार उन के नाते उन का करारा पर्वत ही था, हालांकि उसे एक व्यक्ति की महानता की यादगार बनाने की व्यर्थता शीघ्र ही उन की समझ में आ गयी थी। संसार को एक संश्लिष्ट इकाई के रूप में देखने के हाउप्तमन के सूक्ष्म प्रयासों में से एक प्रयास अमूर्त को मूर्त करने की कलाओं पर आधारित है, जो उन के लिए स्वाभाविक भी था : "...कल्पनाशील भारतीयों ने एक तथाकथित विश्व-पर्वत को जन्म दिया, जिस में उन्होंने सर्वशक्तिमान प्रभु तक के ग्रनेक प्रतीक स्थापित किये। इस प्रकार उन्होंने विश्व को एक छोटे दायरे में सीमित किया, उस में सब देवताओं की परिकल्पना की ग्रौर सीमितता द्वारा उसे ग्रनन्त से पृथक कर दिया। आश्चर्य है कि जरमनी में भी वैसा ही प्रयास विद्यमान है : सन्त सेबाल्डस की समाधि, जिसे पीटर विशेर ग्रौर उस के पुत्रों ने ढले लोहे में बनाया है और जो नूरेम्बर्ग स्थित सन्त सेबाल्डस के गिरजे में मौजूद है...मेरा यह विश्वास हो चला है कि मैं भी अपनी कृतियों के माध्यम से ऐसी ही किसी चीज़ का प्रतिनिधित्व करता हूँ।"

परन्तु ग्रमूर्त को मूर्त करने के उन के सारे प्रयासों के उपरान्त

उन की कृतियों का—यदि मूल नहीं तो पर्याप्त ग्रंश—अचेतन, मदहोशी, रहस्य, कल्पना, भविष्यवाणी के क्षेत्र की सीमा में ही रहता है। उन की दृष्टि में मानव और विशेषतया आदिम मानव रहस्य में जन्म लेता है उस का जीवन सम्मोहित करने वाला रहस्य है :

DAS DASEIN SELBER IST ZU GROSS
SELBST UM ES NUR
ZU AHNEN : ES VERSINKT IM MUTTERSCHOSS
WIE ES ENTSTANDEN, OHNE SPUR

(धुँधली से धुँधली परिकल्पना के लिए भी स्वयं ग्रस्तित्व ही एक बहुत बड़ी चीज़ है : वह माँ के गर्भ में, जहाँ से उस का उद्भव हुआ था, कोई चिह्न बिना छोड़े, समाहित हो जाता है)।

स्पष्ट प्रतीत होता है कि—हाउप्तमन के लिए सृजन-प्रक्रिया की दो प्रमुख अवस्थाओं—अनुभूति और निर्माण—के साथ एक तीसरी भी जुड़ी है : "वह स्वप्न जो दिवस की अनुभूतियों को जाग्रतावस्था में ग्रन्तिम रूप से मूर्त करने से पूर्व ग्राकृतियाँ प्रदान करता है।"

हाउप्तमन को कवियों और लेखकों में ग्रंतिम सीधा-सादा, निश्छल कहा गया है, जो बहुत हद तक सही है। वे चाहे इस कड़ी में ग्रंतिम न हों, परन्तु उन की कृतियाँ ग्रवश्य ही इस दृष्टि से सीधी-सादी, निश्छल हैं कि उन्हें व्यंग्य के रक्षा-कवच से वंचित रहने दिया गया है। पश्चिम का कोई भी आधुनिक लेखक अपनी कृतियों को इस रक्षा-कवच से वंचित न रखेगा : उदाहरण के लिए, उन के ग्रालोचक थामस मन की दृष्टि में उन की कृतियों का जीवन-तत्व ही व्यंग्य है।

इस प्रकार हमारे सामने गैरहर्त हाउप्तमन की कृतियों का, विशेपकर उन के नाटकों का, ऐसा अम्बार लगा है जिस का मज़ाक़ भी उड़ाया जा

सकता है, उस पर कीचड़ भी उछाली जा सकती है, उसे बदनाम भी किया जा सकता है—संक्षेप में : वह भेद्य है (इस से उपयुक्त दूसरा शब्द शायद हीं हो); उस संसार में संयोग ही प्रधान है, चाहे जब पासा पलट जाये, वह सहज विनाशशील है : एक करुण संसार ! प्रपात पर खड़ा देव मूलत: एक करुण व्यक्ति है। वह गैरहर्त हाउप्तमन और हाउप्तमन की कृतियों में चित्रित मानव समुदाय—दोनों का प्रतीक है। हाउप्तमन के पात्र सावधानी से बनायी गयी उन खिलौना-नावों के समान हैं, जिन्हें किसी बच्चे ने नदी में छोड़ दिया हो : ज्यों ही वे कथानक की धारा में पड़ीं कि उन के निर्माता का उन पर कोई वश नहीं रह जाता। हाउप्तमन के अपने शब्दों में, "नाटक को स्वयं गतिशील होना चाहिए, न कि उस का लेखक उसे गति दे। उस का गति-स्रोत जीवन के स्रोत की भाँति, सब से ओझल रहना चाहिए।

और इस प्रकार वे खिलौना-नावें बढ़ती जाती हैं भाग्य की भँवरों और अपने अंध आवेशों के थपेड़े खाती हुई; हाउप्तमन कहते हैं : हेतु जो कि अपनी अपरिमितता के बावजूद एक दैवी वरदान है, मानवीय व्यवहार का अधिशासक तत्व नहीं है, इस के विरुद्ध वह स्वयं को स्वीकार कराने के प्रयत्नों की लज्जाजनक असफलताओं के कारण, रुचियों और आवेशों के अंधेपन के कारण और भूल और संयोग के नियमन के कारण और भी निर्बन्धित हो रहता है। ड्रेमान हेन्शल का कथन है : "SCHLECHT BIN ICH GEWORN BLOSS ICH KAN NISCHT DAFIER. ICH BIN EBENS HALT ASO NEINGETAPERT MEINS-WEGEN KANN ICH AUCH SCHULD SEIN. WER WEESS'S ? ICH HAETTE JA BESSER KENN'N OBACHT GEBEN. DER TEIFEL IST EBEN GEWITZTER WIE ICH. ICH BIN HALT BLOSS IMMER GRAD-AUS GEGANGEN."

(मैं बुरा हो गया हूँ, लेकिन मेरा इस में दोष नहीं है। प्रवाह में मेरे पाँव उखड़ गये। या शायद यह मेरा अपराध ही हो। कौन जाने ? मुझे अधिक सावधान रहना था। अवश्य ही शैतान मुझ से ज़्यादा चतुर है। मैं तो सदा सीधा ही चला।)

मानव URDRAMA (मूल ड्रामा) की परिकल्पना में हाउप्तमन शेक्सपीयर के बहुत ऋणी हैं। शेक्सपीयर के अनेक पात्र साइलीशियन नाटकों में दृष्टिगोचर होते हैं। प्रायः नम्रतर परिवेशों में। बूढ़े हूण कैलविन की अपरूपता और एरियल पिप्पा की सुकुमार इहलौकिकता के बीच कहीं पर मानव का स्थान है, चाहे उस का नाम हैमलैट हो या हैन्शल, वहीं कहीं स्थान है उस के आत्म-स्थापना के लिए किये जाने वाले निरर्थक संघर्षों का। अन्त में एक बार फिर हमें प्रपात के सामने खड़े उस देव का स्मरण हो आता है जो अब उस श्वेतकेशी बूढ़े से एकाकार हो चुका है झूठे बड़प्पन से कहीं ऊँचे खड़े; वहाँ खड़ा वह एक हारती लड़ाई लड़ रहा है, मगर लड़ ज़रूर रहा है।

—लोठार लुट्से

झंडीवान थील

नोए त्सित्ताउ के गिरजे में इतवार के इतवार झंडीवान थील ज़रूर दिखायी देता। केवल बीमारी की दशा में अथवा ड्यूटी लग जाने पर ही रेल-गुमटी का यह चौकीदार गिरजे से इतवार को अनुपस्थित रहता। जहाँ तक बीमारी का प्रश्न था, पिछले दस वर्षों में केवल दो बार ऐसा हुआ था जब थील बीमारी के कारण गिरजा न जा सका था। एक बार तो तब, जब चलते हुए इंजन के कोयलाख़ाने से गिरा हुआ कोयले का एक बड़ा ढोका उस के पैर में आ लगने से वह लुढ़क कर पुश्ते के नीचे खाई में जा पड़ा था और दूसरी बार तब, जब किसी तेज़ गुज़रती हुई एक्सप्रेस गाड़ी से फेंकी शराब की बोतल उस के सीने में आ लगी थी। इन दो दुर्घटनाओं के अतिरिक्त ऐसा कुछ कभी न हुआ था जब थील काम से छूटते ही ठीक समय पर गिरजाघर न पहुँचा हो।

पहले पाँच वर्षों तक उसे श्प्रे नदी पर बसे अपने छोटे-से गाँव, श्योन शौर्नश्टाइन से नोए त्सित्ताउ तक अकेले ही आना होता था। और तब अचानक एक दिन वह एक नाज़ुक रोगिणी-जैसी स्त्री के साथ दिखायी पड़ा। लोगों के ख़याल में उस जैसे लहीम-शहीम आदमी के साथ वह मुश्किल से ही फबती थी। कुछ दिनों बाद एक इतवार की सुहावनी शाम को उन दोनों ने जीवन भर साथ रहने की शपथ ले कर विवाह कर लिया।

और फिर दो साल तक उस की नाज़ुक नन्ही-सी पत्नी गिरजे में उस के बराबर बैठी नज़र आती रही। दो वर्षों तक उस का धँसे गालों वाला पतला सुता चेहरा थील के ताँबई चेहरे के पास ही प्रार्थना की पुरानी पोथी में झुका दिखायी पड़ता रहा। इस के बाद एक दिन झंडीवान थील फिर पहले की तरह गिरजे में अकेला बैठा दिखायी दिया।

हुतात्मा की शांति के लिए एक दिन गिरजे का घंटा घनघनाया और सारी कहानी ख़त्म हो गयी।

लोगों का कहना था कि इस दुर्घटना का थील पर कोई प्रभाव शायद ही पड़ा होगा। उस की रविवार की साफ़-सुथरी पोशाक के पीतली बटन वैसे ही झमझमाते रहते, ललौहे बालों में पहले की तरह ही तेल रहता, माँग वैसी ही फ़ौजी फ़ैशन में सँवरी रहती। अंतर केवल इतना आया था कि उस की मोटी रोमिल गर्दन कुछ अधिक झुकी रहने लगी थी, कुछ अधिक अधीर हो कर वह प्रार्थना-गीत गाने लगा था। लोगों की आम राय थी कि पत्नी की मृत्यु से उसे कोई ख़ास सदमा नहीं पहुँचा था। यह धारणा तब तो और भी पक्की हो गयी जब साल बीतते न बीतते उस ने दूसरा विवाह कर लिया। उस की दूसरी पत्नी आल्ते ग्रुन्द निवासिनी गठीली दोहरी देह वाली एक ग्वालिन थी।

थील ने जब इस दूसरी पत्नी से अपनी मँगनी की घोषणा की तब तो पादरी को भी बोलना ही पड़ा, "इतनी जल्दी? थील, क्या तुम सचमुच इतनी जल्दी दोबारा ब्याह रचाना चाहते हो?"

"फ़ादर, जाने वाली तो गयी, अब उस के सहारे तो मेरा घरबार नहीं चल सकता।"

"यह तो ठीक है। लेकिन मेरा मतलब है—क्या इस मामले में तुम बहुत जल्दबाज़ी नहीं कर रहे हो ?"

"बच्चे का जीवन नष्ट हो जायेगा।"

थील की पहली पत्नी प्रसव में चल बसी थी। बच्चा, जिस का नाम तोबीयास था, बच गया था।

"हाँ, हाँ, यह तो ठीक है।" पादरी के चेहरे से स्पष्ट था कि इस चर्चा में वह नन्हें तोबीयास की बात तो भूल ही गया था। वह बोला, "इस दृष्टिकोण से तो मैं ने सोचा ही नहीं था। तुम्हारे काम पर चले जाने के बाद अब तक बच्चे की देखभाल कौन करता था ?"

थील ने बताया कि वह तोबीयास को एक बुढ़िया की निगरानी में छोड़ जाता था। लेकिन एक बार तो बच्चा जलते-जलते बचा और दूसरी बार वह उस की गोदी से ही लुढ़क पड़ा। ख़ैरियत यह हुई कि उसे मामूली चोट ही लगी, ज़्यादा नही। लेकिन इस तरह ज़्यादा दिन तो नहीं चल सकता। ख़ासतौर से तब जब कि बच्चा बहुत कमज़ोर था और उस की विशेष देखभाल की ज़रूरत थी। इस के अतिरिक्त उस ने पत्नी को मरते समय यह वचन भी दिया था कि बच्चे की देखभाल बहुत अच्छी तरह करेगा। इन्हीं कारणों से उस के लिए यह दूसरी शादी ज़रूरी हो गयी थी।

थील और उस की नयी पत्नी में ऐसी कोई बात न थी, जिसे ले कर लोग आपस में कानाफूसी या चर्चा करते। थील दंपति बराबर प्रत्येक रविवार को गिरजा जाता। लगता था भगवान ने ग्वालिन को रेल-गुमटी

के झंडीवान थील के लिए ही बनाया था। वह ऊँचाई में उस से कुछ ही इन्च छोटी थी, लेकिन ऊँचाई की कमी उस ने मोटापे में पूरी कर ली थी। चेहरे-मोहरे से वह पति के समान ही उजड्ड थी। हाँ, उस के मुँह पर थील के समान आत्मिक तेज का अभाव था।

यदि थील की यह कामना रही हो कि दूसरी पत्नी के रूप में उसे एक घोर और आदर्श गृहस्थिन मिले तो उस की यह इच्छा आश्चर्यजनक रूप में परिपूर्ण हुई थी। लेकिन, साथ ही उस ने अनजाने में इस पत्नी के रूप में तीन अवगुण भी बटोर लिये थे। वे थे उस की कठोर तथा उद्धत वृत्ति, झगड़ालूपन और पाशविक आवेश।

छह महीने बीतते न बीतते सब को पता चल गया कि झंडीवान की छोटी-सी गृहस्थी में असली मालिक कौन है और किस का शासन चलता है। नौबत यहाँ तक पहुँची कि अब थील हर किसी की दया का पात्र हो कर रह गया था। पुरुष वर्ग कहता कि ग्वालिन का भाग्य अच्छा था जो उसे थील-जैसा गऊ पति मिला; किसी दूसरे के पल्ले पड़ी होती तो छटी का दूध याद आ गया होता; सच है जूते के यार जूते से ही क़ाबू आते हैं; ऐसी जानवर को रास्ते पर लाने के लिए अच्छी तरह धौल-धप्पे की ज़रूरत पड़ती है।

परन्तु थील, भले ही उस के बाहु चाहे जितने पुष्ट-प्रबल थे, अपनी पत्नी पर हाथ छोड़ने वाला प्राणी न था। जिन बातों को ले कर कोई भी दूसरा आदमी बुरी तरह झल्ला उठता, वे शायद उसे महसूस तक न होती थीं। उस ने नियम बना लिया था कि पत्नी के धाराप्रवाह प्रवचन के दौरान वह चुप्पी साधे रहेगा। कभी-कदास अगर वह मुँह खोलता भी

तो उस की वाणी की मंथरता और स्वर की शान्ति का पत्नी की गलाफाड़ चीख़-पुकार से कोई मेल ही न बैठता।

लगता था कि बाहरी दुनिया उसे मुश्किल से ही छू पाती थी। उस के अपने अन्दर कुछ ऐसा था जो बाह्य-संसार की बुराई को अपनी अच्छाई से पूर देता था।

तो भी, बावजूद अपनी सारी शिथिलता के, ऐसे मौक़े आ ही जाते जब उसे हस्तक्षेप करना पड़ता। और ये अवसर वे होते जिन का सम्बन्ध नन्हें तोबीयास से होता। फिर तो थील की बच्चों-सरीखी सरलता, समर्पण-शीलता सहसा एक ऐसी दृढ़ता में परिवर्तित हो जाती कि उस की पत्नी लेना का प्रखर स्वभाव भी उस का सामना न कर पाता।

लेकिन ऐसे क्षण, जिन में थील के स्वभाव का यह पक्ष प्रकट होता था, धीरे-धीरे कम होते गये और अन्त में बिल्कुल ही ख़त्म हो गये। विवाह के पहले साल तो उस ने लेना की ज़्यादतियों का एक सीमा तक क्षीण विरोध किया भी, किंतु दूसरे साल वह भी न रहा। अब झगड़ा होने के बाद वह पत्नी को संतुष्ट किये बिना पहले-जैसी बेरुख़ी से अपने काम पर नहीं जा पाता। अक्सर तो वह उस को खुश करने के लिए उस की ख़ुशामद ही करता।

ब्रांडनबुर्ग के चीड़-वन की वह रेल-गुमटी अब पहले की तरह उस के लिए संसार की सर्वश्रेष्ठ जगह नहीं रह गयी थी। मृत पत्नी की मौन प्रेमिल स्मृतियों का स्थान नयी पत्नी-सम्बन्धी विचार लेने लगे थे। विवाह के प्रथम कुछ महीनों की भाँति अब उस के पैर घर की दिशा में

वितृष्णापूर्वक नहीं घिसटते थे, बल्कि अब वह काम के मिनट और घंटे बेचैनी से गिनता और अक्सर एक उत्तेजक आतुरता से घर की ओर लपकता ।

वही थील, जो अपनी पहली पत्नी से आध्यात्मिक प्रेम के नाते बँधा था, अब दैहिक संवेगों के वशीभूत हो अपनी दूसरी पत्नी के नागपाश में जकड़ गया था । वह लगभग पूरी तौर से उस का आश्रित बन गया था ।

जब-तब उस की आत्मा उसे इस के लिए कचोटती और वह इस स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए तरह-तरह के असाधारण उपाय भी अपनाता । एक काम उस ने यह किया कि अपनी रेल-गुमटी के परिवेश को एक ऐसा तीर्थ मान लिया, जहाँ केवल उस की मृत पत्नी की स्मृति का राज्य था । अनेक बहाने बना कर उस ने लेना को गुमटी पर आने से रोक रखा था । उसे आशा थी कि वह लेना को वहाँ से सदैव दूर रखने में सफल हो सकेगा । यहाँ तक कि उस की दूसरी पत्नी को न तो उस की गुमटी का नम्बर मालूम था और न ही वह यह जानती थी कि वह है किस दिशा में ।

इस प्रकार अपने समय को अपनी जीवित और मृत पत्नी के बीच सावधानी से बाँट कर थील अपनी आत्मा को संतुष्ट रखने में सफल हो गया था । प्रायः, और विशेषतया उन क्षणों में, जब एकान्त में वह अपनी मृत पत्नी की याद में डूबा होता, वह अपनी वर्तमान स्थिति को सत्य के परिप्रेक्ष्य में देखता और तब उसे बड़ी चोट पहुँचती ।

दिन की ड्यूटी में तो पहली पत्नी के साथ उस का आध्यात्मिक

मिलन केवल अपने सहजीवन की मधुर स्मृतियों तक ही सीमित रहता, परंतु रात के अंधकार में जब बर्फ़ीला तूफ़ान चीड़-वन और पुश्ते को झकझोरता आता, तब उस की गुमटी लालटेन के मद्धिम प्रकाश में साक्षात देवगृह ही बन जाती।

मृत पत्नी का एक धुँधला फ़ोटो मेज़ पर रखे और भजनावली तथा बाइबिल खोले वह सारी-सारी रात कभी भजन गाता और कभी पाठ करता। यह क्रम टूटता केवल तब, जब कोई रेलगाड़ी उधर से धड़धड़ाती गुज़रती। प्रायः वह भावोन्मेष की एक ऐसी स्थिति में पहुँच जाता कि उसे अपनी पत्नी सशरीर पास खड़ी प्रतीत होने लगती।

यह रेल-गुमटी, जिस पर थील पिछले दस वर्षों से तैनात था, अपने एकाकीपन के कारण उस की रहस्यात्मक वृत्तियों को और अधिक उभारने में सहायक हुई। उत्तर, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम—किसी भी दिशा में सब से समीप की बस्ती से यह गुमटी पैदल चलने से पौन घंटे की दूरी पर जंगल के बीचोंबीच थी। उस जगह एक ढलुआँ सड़क रेल-पटरियों को काटती थी और थील का काम गाड़ी के समय फाटक को खोलना और बंद करना था।

गरमियों में कई-कई दिन, सर्दियों में कई-कई हफ़्ते बीत जाते और साथी मज़दूरों के अतिरिक्त एक भी आदमी उधर से न गुज़रता। केवल मौसम का फेर-बदल ही उस वीराने का एकमात्र परिवर्तन था। जिन दो दुर्घटनाओं में थील को चोट पहुँची थी, उन के अतिरिक्त थील की एकरसता को भंग करने वाली अन्य घटनाएँ भी इनी-गिनी ही थीं। जैसे कि चार वर्ष पूर्व वहाँ से हो कर शाही स्पेशल धड़धड़ाती हुई

गुज़री थी, जिस में महाराजा ब्रेसलाओ जा रहे थे; एक जाड़े की रात एक्सप्रेस ने एक बारहसिंगा कुचल दिया था; तपती गरमियों में एक दिन जब थील अपने हल्क़े का दौरा कर रहा था; उसे शराब की एक काग-बंद बोतल पड़ी मिली थी। छूने पर बोतल जैसे जल रही थी। थील ने बोतल की शराब की तेज़ी का अनुमान इसी से लगा लिया था कि काग खोलने पर उस में से फुहारा छूट पड़ा था। उस ने जंगल में एक तालाब के किनारे बोतल को ठंडा होने को रख दिया था पर जाने कैसे वहां से वह ग़ायब हो गयी! इस बात को कई बरस बीत गये थे पर थील को जब कभी उस का ख़याल आता, बड़ा पछतावा होता।

इस एकरसता में थोड़ा-सा व्यवधान पड़ता था उस चश्मे से जो चौकी के पीछे ही बहता था। रेलमार्ग अथवा टेलीग्राफ़ विभाग के बारहमासी मज़दूर जब भी वहाँ पानी पीने आते, थोड़ी देर बातें करने के लिए थील के पास ज़रूर ठहर जाते। कभी-कभी जंगल-अधिकारी भी प्यास लगने पर वहाँ पानी पीने आ जाता था।

तोबीयास का विकास बहुत धीरे हो रहा था। दो बरस का होने पर उस ने कुछ बोलना और कुछ चलना सीखा। पिता के लिए उस में असामान्य प्यार था, और ज्यों-ज्यों वह समझदार होता गया उस के प्रति थील का पुराना प्रेम भी जागृत हो गया। लेकिन उसी अनुपात में तोबीयास के प्रति लेना का प्रेम घटता रहा और अगले वर्ष जब उस के स्वयं पुत्र उत्पन्न हुआ तब तो स्पष्ट रूप से तोबीयास उसे बुरा लगने लगा।

अब तोबियास के बुरे दिन शुरू हो गये थे। पिता की अनुपस्थिति में उसे विशेपरूप से सताया जाता। अपने सदारोने छोटे भाई की

ख़िदमत में ही नन्हें तोबीयास को खटते रहना पड़ता और इस के लिए उस बेचारे को कोई पुरस्कार भी न मिलता। वह दिन-ब-दिन कमज़ोर होता गया। उस का सिर शरीर के अनुपात से कहीं अधिक बढ़ गया था और सफ़ेद बुर्राक चेहरे के ऊपर सिर के लाल-लाल बाल एक भोंडा और दयनीय दृश्य उपस्थित करते थे। जब सूखचिड़ी-सा नन्हा तोबीयास अपने तंदुरुस्त छोटे भाई को गोद में ले कर खिचड़ता हुआ श्प्रे नदी की ओर जाता, तो पास-पड़ोस के घरों की खिड़कियों के पीछे से दबे शब्दों में कोसने सुनायी पड़ते, परंतु, किसी की इतनी हिम्मत न थी कि खुल कर कुछ कह सके।

थील ने, जिस का इस बात से सब से अधिक संबंध था, जैसे इस सब की ओर से आँख बंद कर रखी थी और जब कोई पड़ोसी सद्भावनावश इस ओर इशारा करता तो वह उस इशारे को समझने की कोशिश ही न करता।

• • •

एक बार जून में जब थील रात की ड्यूटी से सवेरे सात बजे लौटा तो आते ही लेना ने उस का न हाल पूछा न चाल, बस अपना रोना ले कर बैठ गयी।

कुछ सप्ताह पूर्व उन्हें यह नोटिस मिला था कि उन्हों ने आलू बोने के लिए जो ज़मीन किराये पर ली थी, अब वे उस पर खेती नहीं कर सकेंगे। लेना को उस के बदले में दूसरी ज़मीन मिल नहीं सकी थी।

यद्यपि भूमि संबंधी सारी बातें लेना का ही कार्यक्षेत्र थीं, तथापि थील को बार-बार यही सुनना पड़ा कि अगर गाढ़ी कमाई का पैसा ख़र्च करके दस बोरी आलू बाज़ार से खरीदने पड़े तो इस का सारा दोष थील के ही सिर होगा। जवाब में थील केवल एक-दो शब्द बुदबुदा कर रह गया। लेना की बकझक पर कान दिये बग़ैर वह सीधा तोबीयास के बिस्तर पर पहुँचा। जिन रातों उस की ड्यूटी न होती, वह और तोबियास एक ही बिस्तर पर साथ-साथ सोते थे।

अपने भोले-से चेहरे पर चिंता की रेखाएँ लिए वह बिस्तर पर बैठ कर निद्रामग्न तोबीयास को देखता रहा। कुछ देर तो वह उस के मुँह पर बार-बार आ बैठने वाली मक्खियों को उड़ाता रहा, फिर उस ने बच्चे को जगा लिया। बच्चे की गहरी धँसी, नीली आँखों में प्रसन्नता की एक मर्मस्पर्शी चमक भर गयी। हाथ बढ़ा कर उस ने पिता का हाथ पकड़ लिया और एक दयनीय मुसकान उस के होंठों पर दौड़ गयी। तोबीयास के पास जो भी थोड़े-बहुत कपड़े थे उन्हें पहनने में थील ने उस की मदद की। अचानक उस के मुख पर दुःख की एक छाया घिर आयी क्योंकि उस की दृष्टि बेटे के सूजे हुए दाहिने गाल पर पड़ गयी थी जहाँ अँगुलियों के लाल निशान उभरे हुए थे।

नाश्ते के समय लेना ने फिर दुगने ज़ोर-शोर से भूमि वाली वही बात उठायी। इस बार उसे बीच ही में टोकते हुए थील ने बताया कि पटरी-इंस्पेक्टर ने गुमटी के क़रीब ही रेल-मार्ग के बराबर वाली ज़मीन का एक टुकड़ा उसे मुफ़्त में दे दिया है। दूर होने के कारण यह टुकड़ा इंस्पेक्टर के काम में नहीं आ रहा था। पहले तो लेना को यह कोरी गप्प ही लगी, मगर फिर धीरे-धीरे उस का शक दूर हो गया और वह बहुत ख़ुश

हुई। "टुकड़ा कितना बड़ा है? मिट्टी उपजाऊ है कि नहीं?" वह सवाल पर सवाल पूछे जा रही थी। और जब उसे पता चला कि उस ज़मीन में फलों के दो छोटे-छोटे पेड़ भी हैं, तब तो उस की ख़ुशी का ठिकाना ही न रहा। आखिर प्रश्नों की झड़ी समाप्त हुई और जब बनिये की घंटी, जो आसपास के सब घरों में सुनायी पड़ती थी, बजी तो वह यह समाचार गाँव भर को सुनाने के लिए घर से दौड़ पड़ी।

आते समय थील जंगल से तोबीयास के लिए कुछ चीड़फल ले आया था। जितनी देर लेना सामान से ठसी अँधेरी दुकान में रही, तोबीयास अपने पिता के घुटनों पर बैठा उन्हीं चीड़फलों से खेलता रहा।

"बड़े हो कर तुम क्या बनोगे?" थील ने उस से पूछा। यह प्रश्न वह प्रायः ही तोबीयास से करता और उसे हमेशा वही रटारटाया जवाब मिलता, "रेल-पटरी-इंस्पेक्टर।"

मगर यह सवाल वह मज़ाक में नहीं पूछता था। झंडीवान के स्वप्नों की उड़ान सचमुच यही थी। वह बड़ी गंभीरता से यही आशा लगाये बैठा था कि ईश्वर ने चाहा तो तोबीयास कुछ-न-कुछ असाधारण बन कर रहेगा। ज्यों ही बच्चे के रक्तहीन होंटों से 'पटरी-इंस्पेक्टर' निकला, थील का चेहरा एक अद्भुत आनन्द से दमदमा उठा।

"अच्छा बेटा, जाओ अब खेलो!" थील ने बच्चे को गोद से उतार दिया और अँगीठी से एक जलती लकड़ी निकाल कर उस की लपट से अपना पाइप सुलगाने लगा। तोबीयास लजाता-मुसकाता घर से बाहर चल दिया।

कपड़े उतार कर थील बिस्तर पर जा लेटा । बहुत देर तक वह नीची, चिटकी हुई छत को देखता रहा । अंत में उसे नींद आ गयी और लगभग बारह बजे तक वह सोता रहा । फिर इधर लेना ने अपनी आदत के मुताबिक़ खटर-पटर करके खाना बनाना शुरु किया और उधर वह कपड़े पहन कर तोबीयास की खोज में बाहर निकल गया ।

तोबीयास एक टूटी दीवार के गढ़े से पलस्तर खुरच-खुरच कर अपने मुँह में भर रहा था । थील उस का हाथ पकड़ कर गाँव के मकानों के सामने से होता हुआ उसे श्प्रे के किनारे ले गया । छितरे पत्तों वाले चिनारों के बीच नदी का जल काला और चिकना नज़र आ रहा था । थील तट के समीप एक पत्थर पर बैठ गया ।

मौसम साफ़ होने पर गाँव वाले थील को उसी पत्थर पर बैठे देखने के आदी हो गये थे । बच्चे तो उस पर जान देते थे । वे उसे थीलबाबा कह कर पुकारते । अपने बचपन के जो खेल उसे याद थे उन्हें वह बच्चों को सिखाता । लेकिन सब से बढ़िया खेल वह अपने तोबीयास के लिए सुरक्षित रखता । उस के लिए जो तीर बना कर वह देता वे और बच्चों के तीरों से कहीं आगे पहुँचते । अपनी मोटी आवाज़ में वह बच्चों के लिए झूमझूम कर लोकगीत गाता और चाक़ू की मुठिया से पेड़ की छाल पर ताल देता जाता । यह सब करने में उसे बड़ी तृप्ति का अनुभव होता ।

लोग उसे बेवक़ूफ़ समझते । उसे बुरा-भला कहते । उन की समझ ही में न आता कि उन छोकरों के लिए वह क्यों इतना सिर खपाता था । हालाँकि उन्हें तो खुश होना चाहिए था कि जितनी देर बच्चे

थील के साथ रहते थे, उन की भलीभाँति निगरानी होती थी। थील उन के साथ केवल खेल ही न खेलता बल्कि बड़े बच्चों से सबक़ भी सुनता तथा उन्हें बाइबिल ग्रौर भजन याद कराता; छोटों को क-ल-म, स-ब-क ग्रादि के हिज्जे बताता।

दोपहर के खाने के बाद थील ने फिर थोड़ी देर आराम किया, एक प्याला काफ़ी पी, ग्रौर काम पर जाने की तैयारी करने लगा। इस में उसे बड़ी देर लगती थी, क्योंकि वह हर काम धीरे-धीरे इतमीनान से करता था। बरसों की आदत जो ऐसी ही पड़ी थी। मेज़ पर क़रीने से रखी उस की चीज़ें हमेशा एक ख़ास क्रम से उस की भिन्न-भिन्न जेबों में पहुँचतीं—चाक़ू, नोटबुक, कंघा, घोड़े का एक दाँत, पुरानी एक घड़ी ग्रौर लाल काग़ज़ में लिपटी एक छोटी-सी किताब। इस किताब को वह बहुत ही एहतियात से रखता; रात में तकिये के नीचे ग्रौर दिन में ग्रंदरवाली जेब में। किताब के ऊपर एक लेबल पर थील के हाथ से मोटे-मोटे भद्दे ग्रक्षरों में लिखा था, 'तोबियास थील का सेविंग्स एकाउंट।'

जब थील घर से चला, तो लंबे पेंडुलम वाला, बीमार-जैसे पीले डायल का क्लाक पाँच बजा रहा था। एक छोटी-सी नाव में, जो उस की निजी थी, उस ने श्प्रे नदी को पार किया। दूसरे किनारे पहुँच कर वह थोड़ी देर ख़ामोश हो कर घर की दिशा में कान लगाये कुछ सुनता रहा। और तब एक चौड़े रास्ते से हो कर कुछ ही क्षणों में गंभीर गुंजान चीड़-वन में पहुँच गया। चीड़ों की असंख्य सलाइयाँ एक गहरे तरंगित समुद्र-जैसी प्रतीत हो रही थीं।

सलाइयों की नम परतों ग्रौर गीली मिट्टी ने भूमि पर मानो एक ऐसा क़ालीन बिछा दिया था, जिस पर चलने में पाँव धँसते थे और किसी

प्रकार की आवाज़ न होती थी। थील ज़मीन में नज़रें गड़ाये चला जा रहा था। कभी वह पुराने, रूखे, भूरे तनों के पास से हो कर गुज़रता, कभी गहन गुम्फित जवान पेड़ों के पास से और कभी नन्हीं पौध के खंडों के पास से, जिन की रक्षा के लिए जहाँ-तहाँ लंबे पतले देवदारु खड़े थे। एक पारदर्शी, गंधायित, नीलाभ धुंध ने धरती से उठ कर वृक्षों के आकार को अस्पष्ट कर रखा था। उदास, दूधिया आकाश वृक्षों की चोटियों पर झुका था। शोर मचाते हुए कौवों के झुंड वातावरण की धूसरता में स्नान करते-से लग रहे थे। पथ के गड्ढों में काली कीचड़ भरी थी जो प्रकृति की खिन्नता को और भी अवसादग्रस्त बनाये हुए थी।

थील जब अपनी तंद्रा से चौंका तो सहसा उस के मुँह से निकल पड़ा, 'बड़ा डरावना मौसम है!'

उस के विचारों को झटका लगा। उसे कुछ ऐसा आभास हुआ, मानो वह कुछ भूल आया हो। जेबें टटोलीं तो पाया कि वह नाश्ते के लिए सैंडविचें, जो काम की लंबी अवधि में उस के लिए ज़रूरी थीं, घर ही भूल आया। कुछ देर वह असमंजस में खड़ा रहा और फिर तुरन्त घर की ओर लौट पड़ा।

थोड़ी ही देर में वह श्प्रे नदी के किनारे पहुँच गया। जल्दी-जल्दी डाँड़ चला कर वह दूसरे तट पर आ लगा और फ़ौरन ही गाँव की ढलवाँ सड़क पर चढ़ने लगा। परिश्रम से वह पसीना-पसीना हो रहा था। दुकानदार का बूढ़ा खरसैला कुत्ता सड़क के बीचोंबीच पड़ा ऊँघ रहा था। एक मकान के तारकोल पुते तख़्तों के बाड़े पर बैठे सफ़ेद पंखों और काले सिर वाले कौवे ने अपने पर फैलाये, शरीर झटकारा, गर्दन को टेढ़ा किया,

और कर्णकटु काँव-काँव करके पंखों को फड़फड़ाता हुआ वह उड़ा और हवा के बहाव में वन की ओर तैर गया।

लगभग २० मछुओं और मज़दूरों के परिवार वाले गाँव में उस समय कोई मानव दिखायी नहीं दे रहा था।

खामोशी टूटी चीखने-चिल्लाने की एक आवाज़ से। झंडीवान के पाँव जैसे जकड़ गये। क्रोध में डाँटने-डपटने की एक आवाज़ जैसे उस के कानों को छेदे डाल रही थी। आवाज़ जिस छोटे-से मकान की खुली खिड़की से आ रही थी, वह उसी का था।

वह यथासंभव दबेपाँवों मकान के समीप सरकने लगा। अब वह अपनी पत्नी की आवाज़ को साफ़-साफ़ पहचान रहा था। दो-चार डग और बढ़ने पर एक-एक शब्द उस की समझ में आने लगा।

"मरे, घिनौने जानवर! चाहे मेरा नन्हाँ मुन्ना भूख से बिलबिला कर जान दे दे! ऐं? ठहर—तू ठहर ज़रा! तुझे वो मज़ा चखाऊँगी कि तू भी याद रखेगा!"

कुछ क्षण खामोशी रही। फिर ऐसा लगा जैसे मुँगरी से कोई कपड़े पीट रहा हो, और दूसरे ही क्षण गालियों की बौछार फिर पड़ने लगी—"मरे, कलमुँहे कुत्ते! आखिर तू ने समझ क्या रखा है, क्या मैं तेरे-जैसे कमीने के लिए अपने बच्चे को भूखा मार दूँगी?—खबरदार जो मुँह खोला!" किसी के रिरियाने की आवाज़ आने लगी। "अगर मुँह से तू ने ज़रा-सी भी आवाज निकाली तो हड्डी-पसली तोड़ कर धर दूँगी और तू महीनों खाट गोड़ेगा।"

मगर रोने की आवाज़ बराबर ग्राती रही।

झंडीवान को लगा जैसे उस का दिल ग्रसमान गति से धड़क रहा हो। उसे कँपकँपी आने लगी थी। आँखें धरती पर गड़ी थीं। होश-हवास मानो गुम हो गये थे। अपने खुरदुरे सख़्त हाथ से उस ने चित्ती पड़े माथे पर छिटकी एक काली लट को पीछे कर लिया। एक क्षण को लगा जैसे वह बिखर जायेगा। जैसे उसे किसी ने ज़ोर से झँझोड़ डाला था, पुट्ठे तन गये थे ग्रौर मुट्ठियाँ भिंच गयी थीं। फिर वह संक्षोभ समाप्त हो गया और वह निष्प्राण-सा खड़ा रह गया।

लड़खड़ाता हुग्रा वह पतली खड़ंजे वाली ड्योढ़ी में से हो कर धीरे-धीरे, थके क़दमों से, चर्रमर्र करती हुई काठ की सीढ़ी पर चढ़ने लगा।

"थू-थू-थू !" किसी ने भयंकर क्रोध और तिरस्कार से तीन बार थूका। "घिनौने, कमीने, नीच, निकम्मे, मुरदे, पाजी—" उपाधियाँ लगातार उत्तरोत्तर चढ़ते स्वर में उच्चारी जा रही थीं। दबाव के कारण बीच में कई बार आवाज़ टूट भी जाती थी। "मेरे बच्चे को मारना चाहता है तू, ऐं? बदसूरत, शैतान, इस बेचारे मासूम के मुँह पर मारने की तू ने हिम्मत की तो देख लेना! क्या कहा? ऐं? तेरे खून से मैं ग्रपने हाथ गंदे नहीं करना चाहती, नहीं तो..."

ठीक उसी समय द्वार खुला और शेष वाक्य भयभीत लेना के मुँह ही में रह गया। उत्तेजना से उस का शरीर पीला पड़ गया था ग्रौर होंट बुरी तरह फड़क रहे थे। उस का हवा में उठा दाहिना हाथ नीचे झूल गया, जिस से उस ने दूध का बरतन थाम लिया ग्रौर बोतल में दूध उँड़ेलने लगी। मगर हाथ काँपने के कारण ग्रधिकांश दूध बोतल में न

जा कर बाहर मेज़ पर गिरने लगा और वह रुक गयी। वह कभी इस चीज़ को पकड़ती कभी उस को, मगर काँपते हाथों से वह कुछ थाम ही न पा रही थी। धीरे-धीरे उस ने अपने पर इतना क़ाबू पा लिया कि पति पर बरस सके, "इस नावक़्त घर लौटने का क्या मतलब ? क्या तुम जासूसी करने के फेर में हो ? यह बात मैं हरगिज़ बरदाश्त नहीं करूँगी।" यह अंतिम बात कह कर उस ने फ़ौरन ही क़सम खायी कि उस के मन में तो कोई पाप है नहीं और इसीलिए उसे किसी का डर भी नहीं है।

वह जो कुछ कहे जा रही थी, मुश्किल से ही थील के कानों में पड़ रहा था। उस ने तोबी की ओर, जो गला फाड़ कर रो रहा था, जल्दी से एक नज़र डाली और कुछ क्षण के लिए मन के भीतर उठते ज्वार को बड़ी कठिनाई से रोका। फिर सहसा उस के तने चेहरे पर वही पहले वाली शिथिलता आ गयी और साथ ही उस की आँखों में वासना की एक रेखा चोरी-चोरी कौंध गयी। लेना मुँह फेरे हुए अपने को संयत करने का प्रयत्न कर रही थी और थील की दृष्टि उस के गठीले अंगों से खेल रही थी। पत्नी के उभरे अधनंगे उरोज उत्तेजना से उफने पड़ रहे थे। लगता था कि वे चोली में से फट पड़ेंगे। ऊपर को उनसी हुई स्कर्ट उस के भारी नितम्बों को और भी स्पष्ट कर रही थी। उस स्त्री में कोई ऐसा खिंचाव था जिस का न तो प्रतिरोध किया जा सकता था और न जिस से बचा जा सकता था। उस खिंचाव के सामने थील न ठहर सका। मकड़ी के जाले की तरह वासना का आकर्षण उस के चारों ओर पुर गया, लेकिन यह जाला मानो लोहे का था जिस ने उसे जकड़ लिया था और शक्तिहीन कर दिया था। इस हालत में वह अपनी पत्नी से सख़्त-सुस्त तो क्या, कुछ भी कहने में लाचार था।

और इस प्रकार तोबियास ने, जो आँसुओं से तरबतर एक कोने में सहमा खड़ा था, देखा कि उस का पिता बिना किसी ओर दृष्टि डाले सीधा चूल्हे के ऊपर वाले ताक तक गया और वहाँ से भूली हुई सैंडविच उठा कर अपनी सफ़ाई में उसे लेना को दिखाता हुआ, गरदन के एक हल्के झटके से अलविदा कह कर बाहर निकल गया। • • •

थील उड़ते पाँवों सुनसान जंगल में अपनी गुमटी पर पहुँचा। फिर भी उसे १५ मिनट की देर हो ही गयी थी। उस की बदली में जो आदमी गुमटी पर रहता था, वह तेज़ी से बदलते मौसम का शिकार और दिक़ का मरीज़ था। वह गुमटी के बाहर रेतीले चबूतरे पर, जहाँ सफ़ेद ज़मीन पर काले में लिखा गुमटी का नम्बर पेड़ों के तनों के बीच दूर से चमकता था, जाने के लिए बिल्कुल तैयार खड़ा था।

दोनों ने हाथ मिलाया, एक दूसरे को रिपोर्ट दी और विदा हो गये। एक गुमटी के अंदर चला गया और दूसरा उसी सड़क पर चल पड़ा जिस से हो कर थील अभी आया था। उस की तेज़ खाँसी पेड़ों के बीच उत्तरोत्तर दूर होती गयी और अंत में उस सन्नाटे को भंग करने वाली एकमात्र यह मानव-ध्वनि भी ख़ामोश हो गयी।

थील सदा की भाँति पत्थरों की बनी गुमटी में रात के लिए तैयारी करने लगा। यंत्रचालित-जैसा वह हाथों से काम कर रहा था, लेकिन उस का मन हाल की घटनाओं में ही उलझा था।

सब से पहले उस ने अपना खाना खिड़की के सहारे रखी सँकरी बादामी मेज़ पर रखा। इस छोटी-सी खिड़की से रेल-मार्ग बख़ूबी नज़र आता था। इस के बाद छोटे, ज़ंग खाये स्टोव में आग जलायी और उस पर पानी चढ़ा दिया। फिर अपने औज़ार—एक कुदाल, एक बेलचा, रिंच आदि ठीक से रखे और तब लालटेन साफ़ करके उस में तेल भरा।

ये सब काम ख़त्म हुए ही थे कि तीन बार सिगनल की घंटी ज़ोर से बज उठी। यह सूचना देने के लिए कि ब्रेसलाग्रो की ओर वाले स्टेशन से गाड़ी छूट रही है, घंटी फिर तीन बार बजी। थील ने कोई जल्दबाज़ी नहीं दिखायी। कुछ देर बाद इतमीमान से झंडी तथा कारतूसों की थैली ले कर वह गुमटी से बाहर आया और धीरे-धीरे पैर घसीटता हुआ कोई बीस गज़ दूर रेल-फाटक तक पहुँचा। हालाँकि उस स्थान पर सड़क बिल्कुल सुनसान हो रहती थी, लेकिन वह हर गाड़ी के आने से पहले और बाद में फाटक को सावधानी से बंद करता, खोलता था।

काला-सफ़ेद रोग़न-पुता फाटक बंद करके वह उसी से लग कर खड़ा हो गया।

रेल की पटरियाँ एक सीध में दृष्टि से परे दूर तक जंगल को दायें-बायें काटती चली गयी थीं। दोनों ओर ललौंही बजरी वाले पुश्ते के परे चीड़ की सलाइयों के ढेर जमा थे। समानांतर काली पटरियाँ किसी बड़े लोहे के जाल की तनियाँ-सी लग रही थीं, जो उत्तर और दक्षिण में दूर क्षितिज पर परस्पर मिल कर एक हो गयी थीं।

हवा चल पड़ी थी और दूर वन के किनारे धुंध की लहरियों को

छितरा रही थी। पटरियों के पास वाले टेलिग्राफ़ के खंभों से झन-

झनाहट सुनायी देने लगी थी । खंभों के बीच किसी दानवाकार मकड़े द्वारा बुने गये मज़बूत धागों की तरह तार फैले थे जिन पर चहचहाती चिड़ियों के झुंड के झुंड बैठे थे । एक कठफोड़वा शोर मचाता हुग्रा थील के सिर के ऊपर से तेज़ी से उड़ कर ग्रोझल हो गया ।

विशाल मेघखंडों की किनारियों से लटकता हुग्रा सूरज, वृक्षों की चोटियों के हरे सागर में डूबने से पूर्व जंगल में रक्तवर्णी आभा बिखेर रहा था । पुश्ते के दूसरी ओर चीड़ों के मेहराबदार खभे मानो अपने ग्रंदर से आग उगल रहे थे ग्रौर धातु की मानिंद झमझमा रहे थे। पटरियाँ भी चमक कर अग्नि सर्प-जैसी प्रतीत होने लगी थीं । फिर सब से पहले वे ही पीली पड़ीं । चमक धरती छोड़ कर धीरे-धीरे ऊपर सरकने लगी । पहले वह पेड़ों के तनों से हटी, फिर निचली चोटियों से होती हुई विलय के शीतल प्रकाश तक पहुँच गयी । कुछ क्षणों के लिए ऊपर की फुनगियों पर एक रक्ताभ कांति अठखेलियाँ करती रही—और फिर सब समाप्त ।

प्रकृति नटी की यह क्रीड़ा बड़ी शांति ग्रौर गंभीरता से संपन्न हुई ।

झंडीवान ग्रब भी फाटक से लगा निश्चल खड़ा था । आख़िर वह एक डग बढ़ा । क्षितिज का वह बिंदु, जहाँ पटरियाँ मिलती थीं, कुछ बड़ा हो गया था ग्रौर क्षण-क्षण बढ़ता जा रहा था, फिर भी रुका हुआ प्रतीत होता था; ग्रौर तब सहसा उस में एक गति आ गयी और वह समीप आने लगा। पटरियों में एक कंपन ग्राया और उन में गुंजार भर गयी। एक तालबद्ध झनझनाहट, एक दबा गर्जन ! जो बढ़ता गया ग्रौर बढ़ता गया । फिर वह प्रचंड वेग से दौड़ते रिसाले के घोड़ों की टापों-जैसा प्रतीत होने लगा । हवा रह-रह कर दहाड़ती, हाँफती लग रही थी।

ग्रौर फिर सहसा चीड़-वन की शांत-सौम्यता एक झटके से भंग हो गयी। अम्बर एक पागल चीख़ से भर उठा, पटरियाँ ख़म खा गयीं, धरती हिल उठी—हवा का एक झक्कड़ आया, धूल, धुएँ और भाप का एक बादल उठा—और फुफकारता हुआ काला दानव गुज़र गया।

शोर जिस गति से झनझनाया था, उसी गति से तिरोहित भी हो गया। उच्छ्वास क्षीण हो गये। गाड़ी सिकुड़ कर फिर एक बिंदु बनी ग्रौर लुप्त हो गयी। जंगल के उस कोने में फिर वही सौम्य निस्तब्धता व्याप गयी।

"मिन्ना!" थील बुदबुदाया, मानो सोते से जगा हो।

वापस ग्रपनी गुमटी में आ कर उस ने हल्की-सी काफ़ी तैयार की और बैठ कर उस में से जब तब घूंट भरते हुए एक पुराने गंदे ग्रख़बार को, जिसे वह रास्ते में ही पढ़ चुका था, अपलक देखता रहा।

धीरे-धीरे वह एक ग्रजीब बेचैनी से भर उठा। स्टोव की गरमी के कारण है क्या यह बेचैनी? उस ने अपना कोट ग्रौर जाकेट उतार दी। इस से भी कोई लाभ न हुग्रा तो कोने में पड़ी कुदाल उठायी ग्रौर भूमि के उस टुकड़े की ओर चल पड़ा, जो इंस्पेक्टर ने उसे दिया था।

सँकरा-सा वह खेत जंगली घास-फूस से भरा था। फलों के दोनों वृक्षों का बौर सफ़ेद बर्फ़ीले झाग-जैसा लग रहा था। थील की बेचैनी कम हो गयी। यहाँ आ कर एक शांत सँतोष से वह भर उठा।

अब काम करना चाहिए।

एक आवाज़ के साथ कुदाल ज़मीन में धँस गयी। मिट्टी के गीले ढेले उछले और नीचे गिर कर बिखर गये।

बहुत देर तक अबाध कुदाल चलाने के बाद वह सहसा रुक गया और गंभीरतापूर्वक सिर हिलाता हुआ स्वयं से बोल उठा, "नहीं, नहीं, यह नहीं होगा।"

उस के मन में सहसा यह विचार कौंध गया था कि खेत को देखने लेना यहाँ प्रायः आया करेगी और इस प्रकार गुमटी में जिस तरह के जीवन का वह आदी हो गया है, वह बुरी तरह छिन्न-भिन्न हो जायेगा। एक ही झटके में खेत पाने का सुख वितृष्णा में परिवर्तित हो गया। वह मानो कोई पाप करते-करते बचा हो, फ़ौरन ही इस भाव से उस ने उसी समय कुदाल को धरती से निकाला और वापस गुमटी में आ गया।

वहाँ वह पुनः विचारों के ताने-बाने में खो गया। जाने क्यों, वह यह सहन नहीं कर पा रहा था कि जब वह ड्यूटी पर रहे, लेना सारा-सारा दिन वहीं मौजूद रहे। उस ने अपने को बहुतेरा समझाया मगर उस का मन इस बात पर समझौता करने को तैयार ही नहीं होता था। उसे लग रहा था मानो उसे किसी बहुमूल्य वस्तु की रक्षा एक ऐसे प्राणी से करनी थी जो उस की पवित्रतम सीमा में घुस आना चाहता था। अनचाहे ही उस की मांस-पेशियाँ तन गयीं और एक हँसी उस के मुँह से निकल गयी।

अपनी ही हँसी की आवाज़ से उस की विचारधारा टूट गयी और वह चौंक गया। लेकिन एक बार अपने चारों ओर देख कर वह फिर उन्हीं विचारों में डूब गया।

और तब सहसा जैसे सामने से एक काला परदा हट गया। उस की आँखों पर छाया धुंध साफ़ हो गया। दो वर्ष की मृत्यु-सरीखी निद्रा से जाग उठने का स्फुरण उस ने अनुभव किया। इस सुषुप्ति में जिन-जिन भयानक भूलों का वह शिकार हुआ होगा, वे सब उस के मस्तिष्क में चक्कर काटने लगीं। नन्हें तोबीयास को इस बीच कितना सहना पड़ा होगा, इस का प्रमाण उसे दोपहर ही मिला था। इस लंबे अर्से में वह बराबर निष्क्रिय बना रहा था, उस प्यारे-प्यारे बेसहारे बच्चे की उस ने एक बार भी तरफ़दारी नहीं की थी, यहाँ तक कि यह समझने की कोशिश भी नहीं की थी कि उसे कितना कष्ट उठाना पड़ रहा है—यह सब सोच कर वह करुणा, पश्चाताप और गहरी शरम से भर गया।

बच्चे के प्रति उपेक्षा बरत कर उस ने कितना बड़ा पाप किया है—यह सोच-सोच कर उस का मन ग्लानि से भर उठा। एक गहरी थकन से शिथिल हो वह मेज़ पर झुक, सिर को हाथों के सहारे टिका कर सो गया।

बहुत देर तक वह उसी प्रकार पड़ा रहा और इस बीच कई बार भर्राये गले से उस के मुँह से निकला, "मिन्ना! मिन्ना!"

सहसा एक विशाल उमड़ती जलराशि-जैसा गर्जन उस के कानों में गूँज उठा। भौंचक्की-सी आँखें खोल कर उस ने चारों तरफ़ देखा। अंधकार चारों ओर से घिरा हुआ था। उस के हाथ पैरों ने जवाब दे दिया था, भय के कारण रोम-रोम से पसीना बह निकला था, नब्ज़ असमान गति से चलने लगी थी और मुँह आँसुओं से तर हो गया था।

उस ने देखने की कोशिश की मगर गहन अंधकार में उसे द्वार का

 बोध ही न हुआ। लड़खड़ाता हुआ वह उठा। भय से वह अभी तक

काँप रहा था। बाहर जंगल समुद्र की भाँति गरज रहा था। पानी और ओलों की आवाज़ खिड़की से टकरा रही थी। थील असहाय-सा इधर-उधर टटोल रहा था। एक क्षण को तो उसे ऐसा लगा मानो वह अभी डूब जायेगा। तब अचानक एक चकाचौंध करती नीली लपट दिखायी दी, मानो किसी दैवी ज्योति की बूँदें आकाश से पृथ्वी के वातावरण में गिर कर तुरंत बुझ रही हों।

थील को प्रकृतिस्थ करने के लिए यह एक क्षण पर्याप्त था। उस ने हाथ बढ़ा कर अपनी लालटेन टटोली। तभी निशाकाश के छोर पर ब्रांडनबुर्ग के ठीक ऊपर बिजली कौंधी। पहले जो महज़ एक मंद दबी गड़गड़ाहट थी, अब वह घनघनाती लहरों की भाँति नज़दीक सिमटती आयी और ठीक सिर पर पहुँच कर भयानक कड़क के साथ फट पडी, जिस से खिड़की के काँच चरचरा उठे और धरती बुरी तरह काँप उठी।

थील ने लालटेन जलायी। प्रकृतिस्थ होने के बाद सब से पहले उस की निगाह घड़ी पर पड़ी। पाँच मिनट के अंदर ही एक्सप्रेस गाड़ी आने वाली थी। यह सोच कर कि मैं सिगनल की आवाज़ नहीं सुन पाया होऊँगा, वह वर्षा-तूफ़ान में यथासंभव तेज़ी से फाटक पर पहुँचा। फाटक बंद कर ही रहा था कि सिगनल बज उठा, जिस की आवाज को हवा ने चारों ओर बिखेर दिया।

चीड़ के पेड़ हवा से झुके जा रहे थे, शाखाएँ एक दूसरे से रगड़ खा कर भयानक कर्कश ध्वनियाँ उत्पन्न कर रही थीं। कुछ क्षणों के लिए बादलों की फटन में से पीले कटोरे-जैसा मंद चाँद झाँका। उस की रोशनी में दिखायी दिया कि हवा वृक्षों की काली चोटियों को किस बुरी तरह झकझोरे डाल रही थी। पुश्ते के किनारे भुर्ज के पत्ते किसी

प्रेतकाय घोड़े की पूँछ की भाँति फड़फड़ा रहे थे । उन के नीचे भीगी रेल की पटरियाँ चमक रही थीं, जिन पर चाँद की पीली किरणें यहाँ-वहाँ पड़ रही थीं ।

थील ने सर से टोपी उतार डाली । वर्षा के जल से वह कुछ शांत हुआ । आँसुओं के साथ मिल कर जल उस के चेहरे को तरबतर कर रहा था ।

स्वप्न की व्याकुल कर देने वाली याद उस के दिमाग़ को चकरा रही थी । सपने में उस ने देखा था कि तोबीयास के साथ दुर्व्यवहार हो रहा है, दुर्व्यवहार भी ऐसा कि जिस के विचार मात्र से थील के दिल की धड़कन बंद होने लगी थी । दूसरा सपना अपेक्षाकृत स्पष्ट था—वह था उस की पहली पत्नी के बारे में । वह कहीं से पटरियों-पटरियों आ रही थी । उस के कपड़े चिथड़ा हो रहे थे और वह बहुत ही बीमार प्रतीत होती थी । बिना नज़र घुमाये वह गुमटी के पास से हो कर आगे निकल गयी । और तब—यहाँ उस की स्मृति धुँधला गयी थी—जाने कैसे, उसे चलने में बड़ी कठिनाई होने लगी थी और वह कई बार लड़खड़ा-लड़खड़ा कर गिरी थी ।

थील विचारों में डूब गया । और तब उस की समझ में आया कि मिन्ना किसी चीज़ से बच कर दूर भागने की चेष्टा कर रही थी । ऐसा न होता तो डगमगाते पावों अपने को आगे घसीटते वक़्त वह बार-बार घबरायी दृष्टि से पीछे क्यों देखती ? हे राम, उस की वह दृष्टि !

परंतु उस की गोद में कपड़े से लिपटा लुजलुजा, रक्तरंजित पीला-सा कुछ था । और जिस प्रकार गरदन झुका कर वह उसे देखती थी,

उस से थील को एक पुराना दृश्य याद हो ग्राया ।

ग्रपने नवजात शिशु की ग्रोर टकटकी बाँधे एक मरणासन्न माँ का गहनतम पीड़ा ग्रौर असहाय यंत्रणा का वह भाव थील की स्मृति में ग्रपने माता-पिता की स्मृति की भाँति ही सुरक्षित था ।

कहाँ चली गयी मिन्ना ! वह समझ नही पा रहा था । परंतु उस के मन में एक बात स्पष्ट हो गयी थी——मिन्ना ने अपने आप को थील से विलग कर लिया था, उसे ग्रनादृत कर दिया था; ग्रँधेरी तूफ़ानी रात में अपने को घसीट कर वह दूर, बहुत दूर चली गयी थी । "मिन्ना, मिन्ना !" वह चीख़ उठा । और उस की ग्रावाज़ ही उसे होश में ले आयी ।

दो गोल लाल रोशनियाँ किसी विशाल दानव की आँखों की भाँति ग्रँधेरे को भेद रही थीं । एक रक्तिम चमक ग्रागे-आगे फिसलती ग्रा रही थी और उस में वर्षा की बूँदें रक्त की बूँदों-सरीखी लग रही थीं ।

ज्यों-ज्यों गाड़ी समीप ग्रा रही थी, थील भय से जकड़ा जा रहा था । जाने कैसे वास्तविकता और स्वप्न मिल कर एक हो गये थे ! उसे अपनी पहली पत्नी अब भी पटरियों के बीच जाती दीख रही थी । उस का काँपता हाथ कारतूस की पेटी की ग्रोर बढ़ा, मानो वह रेल को रोकना चाहता हो । मगर सौभाग्य से इस के लिए देर हो चुकी थी । उस की आँखें रोशनी से चौंधिया गयीं, रेल गुज़र गयी ।

शेष रात थील बहुत बेचैन रहा । उस का मन उड़ कर घर पहुँचने को, नन्हें तोबी को—जिस से वह जैसे बरसों से बिछुड़ा हुग्रा था—देखने को छटपटा रहा था । बच्चे की हालत पर बढ़ती हुई चिंता के कारण कई बार उस के मन में हुआ कि ड्यूटी छोड़ कर घर भाग जाये ।

समय काटने के लिए उस ने दिन निकलते ही अपने हल्के का दौरा करने का संकल्प किया। एक हाथ में छड़ी और दूसरे में एक बड़ा रिंच ले कर वह झुटपुटा होते ही रेल की पटरी पर चल पड़ा। बीच-बीच में वह रिंच से कोई डिबरी कसने अथवा किसी फ़िशप्लेट को सही बैठाने के लिए रुक जाता था।

वर्षा और आँधी थम गयी थी। बादलों की दरार से विवर्ण नीले आकाश की कोई-कोई झलक नज़र आ रही थी। लोहे पर उस के जूते की ठक-ठक और भीगे वृक्षों की तंद्रिल टप-टप ने शनैः शनैः थील को शांत किया।

छह बजे वह ड्यूटी से छूटा और तुरन्त घर की ओर चल पड़ा।

रविवार की वह सुबह ख़ूब सुहानी थी। बादल छँट कर क्षितिज के पार चले गये थे। किसी विशाल रक्तवर्णी मणि की मानिंद सूर्य चीड़-वन पर ढेर सारा प्रकाश उँड़ेल रहा था। शाखाओं के जाल से किरणें सीधी पैनी पंक्तियों में झालरदार पर्णांग घास के छोटे-छोटे द्वीपों पर झर कर रजत भूखण्डों को मूँगों की आभा दे रही थीं। पेड़ों की फुनगियों, तनों और घास पर आग-जैसी ओस चमक रही थी। धरती पर मानो प्रकाश की बाढ़ आ गयी थी और हवा की ताज़गी सीधी प्राणों तक पैठ रही थी।

जिन स्वप्न-कल्पनाओं में थील का मन रात डूबा हुआ था, वातावरण की प्रफुल्लता के कारण वे अब धुँधला गयी थीं और जब वह उस कमरे में घुसा, जहाँ बिस्तर में पड़े तोबीयास के गालों को धूप साधारण से अधिक लाली प्रदान कर रही थी, तब तक वे कल्पनाएँ पूर्णतया तिरोहित हो चुकी थीं।

हाँ, लेना को ज़रूर लगा कि जैसे थील में कुछ परिवर्तन आ गया हो। गिरजे में बजाय धर्म पुस्तक पर दृष्टि गड़ाने के वह तिरछी आँखों उसे देखता रहा और दोपहर को जब नित्य की भाँति तोबी बच्चे को खिलाने गली में ले जाने लगा तो थील ने उस की गोद से बच्चे को छीन कर वापस लेना की गोद में दे दिया। इन दो को छोड़ कर और कोई ऐसी बात न हुई जिस से पता चलता कि उस में कोई परिवर्तन आया है।

ड्यूटी बदल जाने के कारण आज उसे दिन में सोने का अवसर नहीं मिला था अत: वह नौ बजे ही बिस्तर में घुस गया। मगर ज्यों ही उस की आँख झपकी कि लेना बोल उठी कि वह कल उस के साथ गुमटी पर जायेगी ताकि आलू बोने के लिए खेत की खुदाई कर सके।

थील चौक उठा। वह अब पूरी तरह जाग गया था, लेकिन आँखें मीचे पड़ा रहा।

लेना अपना राग अलापती रही—"अब न बोये गये तो आलुओं की फ़सल होने से रही। वहाँ कोई थोड़ी-बहुत देर का काम तो है नहीं, सारा दिन लगेगा, इसलिए मैं तो बच्चों को अपने साथ वहीं ले जाऊँगी।"

थील मुँह ही मुँह में न जाने क्या बड़बड़ाया, मगर लेना ने उस ओर कुछ ध्यान न दिया। उस समय वह पीठ फेरे खड़ी थी और मोमबत्ती के प्रकाश में अपनी चोली खोल कर स्कर्ट उतार रही थी। अचानक, और अकारण वह घूम पड़ी और उस की दृष्टि अपने पति के कामुकता से विवर्ण मुख पर पड़ गयी। खाट की पाटी का सहारा ले कर वह उठंगा हुआ था और उस की जलती हुई आँखें लेना पर गड़ी थीं।

कुछ भय और क्रोध मिश्रित आवाज़ में वह चीख़ पड़ी, "थील!"

अपना नाम पुकारा जाता सुन कर किसी स्वप्नाचारी की भाँति थील चौंक पड़ा। वह जाने क्या बड़बड़ाया और तकिये पर सिर डाल, रज़ाई को कानों तक खींच कर पड़ा रहा।

अगली सुबह सब से पहले लेना जागी। दबे पाँवों वह गुमटी पर जाने की तैयारी करने लगी। उस ने छोटे बच्चे को बच्चा-गाड़ी में लिटाया, फिर तोबीयास को जगा कर उसे कपड़े पहनाये। जब तोबी को पता चला कि आज सब गुमटी पर जायेंगे, तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ।

जब सब तैयारी हो गयी, यहाँ तक कि काफ़ी भी मेज़ पर लग गयी, तब कहीं थील जागा। इस तैयारी की सब से पहली प्रतिक्रिया उस पर यह हुई कि वह झुँझला गया। वह चाहता था कि इस सब का विरोध करे, परंतु बात छेड़ने का कोई मौक़ा हाथ नहीं आ रहा था। इस के अतिरिक्त एक बात यह भी थी कि लेना से इस मामले में बहस करने के लिए उस के पास तर्क भी क्या थे। उधर तोबीयास इस बात से बहुत प्रसन्न था और उस का चेहरा खिला जा रहा था। गुमटी पर जाने के प्रस्ताव पर तोबी की प्रसन्नता देख कर थील उस का विरोध करने की बात सोच भी न सकता था।

तो भी, वन में जाते समय जब थील छोटे की बच्चा-गाड़ी को रेत में कठिनाई से ठेल कर ले जा रहा था, वह चिन्तामुक्त न था।

तोबीयास ने रास्ते से फूल तोड़-तोड़ कर गाड़ी में भर दिये थे। पिता ने तोबी को इतना प्रसन्न कभी नहीं देखा था। अपनी नन्हीं-सी रोयेंदार टोपी लगाये वह पर्णांग घास में उछल-उछल कर ऊपर उड़ते पतंगों को पकड़ने की व्यर्थ कोशिश कर रहा था।

पहुँचते ही लेना ने सब से पहले धरती के उस टुकड़े की जाँच-पड़ताल की। भोजपत्र के एक छोटे-से कुज के किनारे घास पर उस ने बीज के आलुओं का बोरा टिकाया और घुटनों के बल बैठ कर कलौंही मिट्टी को हाथ में ले कर परखने लगी।

थील उत्सुकता से उस की ओर देख रहा था।

"क्यों"—वह बोला, "कैसी है ज़मीन ?"

"इस का चप्पा-चप्पा श्प्रे के किनारे वाले कोने के खेत-जैसा बढ़िया है।"

थील के मन से एक बोझ उतर गया। उसे भय था कि लेना को ज़मीन पसंद भी आयेगी अथवा नहीं।

जल्दी-जल्दी डबलरोटी का एक मोटा-सा स्लाइस निगल कर लेना ने अपनी जाकट और ओढ़नी उतार कर एक ओर फेंकी और मशीन-जैसी फुर्ती और दृढ़ता से धरती खोदने में जुट गयी। बीच-बीच में वह कमर सीधी करने को रुकती, गहरी-गहरी साँस लेती और फिर शीघ्र ही दोबारा धरती खोदने लगती। नन्हें को दूध पिलाने के समय उसे ज़रूर कुछ अधिक देर को काम बंद करना पड़ता, लेकिन दूध भी वह हाँफते, पसीना बहते स्तनों से जल्दी-जल्दी पिला डालती थी।

कुछ समय बाद गुमटी के बाहर चबूतरे से झंडीवान ने उसे आवाज़ दी, "मुझे पटरियाँ देखने जाना है। तोबीयास को लिये जा रहा हूँ अपने साथ।"

"पागल हो गये हो क्या !" वह चिल्लायी, "नन्हें के पास कौन रहेगा । चलो इधर"—वह और ज़ोर से चीख़ी ।

मगर थील तोबी को ले कर चल ही पड़ा । मानो उस ने कुछ सुना ही नहीं । एक क्षण तो लेना के मन में आया कि वह दोनों के पीछे दौड़ कर जाये, मगर इस से नाहक़ समय बरबाद होगा—इस ख़याल से रुक गयी ।

थील अपने पुत्र के साथ पटरियों के सहारे-सहारे चला जा रहा था । बालक उमंग से भर उठा था । उस के लिए सभी कुछ एकदम नया और विचित्र था । धूप से गरम वे पतली-पतली पटरियाँ किस काम आती होंगी—यह उस की समझ में नहीं आ रहा था । सब से विचित्र तो उसे टेलीग्राफ़ के खंभों की गूँज लग रही थी ।

अपने हल्क़े के हर खंभे की आवाज़ से थील इतना परिचित था कि वह आँखें बंद कर के बता सकता था कि वह किस खंभे के पास खड़ा है । तोबीयास का हाथ पकड़ कर वह अनेक बार रुक कर खंभों से आने वाली उन विचित्र ध्वनियों को सुनता रहा, जो किसी गिरजे के अंदर से आ रही समवेत प्रार्थना की गूंज सरीखी थीं । सुदूर दक्षिण वाला खंभा विशेष रूप से पूर्ण और सुंदर गूंज निकालता था । मिली-जुली ध्वनियों की यह गूंज अविराम गति से सुनायी पड़ रही थी ।

तोबीयास उस पुराने खंभे के चारों ओर दौड़-दौड़ कर उत्सुकता-पूर्वक जाँच-पड़ताल कर रहा था कि शायद कहीं कोई छेद हो, जिस से इस सुंदर संगीत के उत्स का पता चल सके । उस का पिता गूंज सुनते-सुनते इतना द्रवित हो गया मानो वह किसी गिरजे की गूंज सुन रहा हो । उस

गूँज में उसे एक आवाज़ अपनी मृत पत्नी की आवाज़-जैसी लगी और वह सोचने लगा कि हो न हो यह संगीत पवित्र आत्माओं का है और उस की पत्नी भी इस समवेत गान में शामिल है। एक गहन भावुकता और आकुलता से भर कर उस की आँखें डबडबा आयीं।

तोबीयास ने पूछा कि क्या वह किनारे लगे पौधों से फूल तोड़ ले, और थील ने सदैव की भाँति उस की इच्छा में बाधक न हो कर उसे अनुमति दे दी।

चरागाह में छोटे-छोटे नीले फूल इतने अधिक उगे थे कि वहाँ खंड-खंड हो कर आकाश बिखरा-सा मालूम होता था। भुर्ज वृक्षों के श्वेत चमकदार तनों के बीच फड़फड़ाती उड़ती तितलियाँ झुमकों की भाँति प्रतीत हो रही थीं। हरी कोंपलों से मृदुल-मृदुल सरसराहट आ रही थी।

तोबीयास फूल तोड़ने लगा और पिता ग़ौर से उसे देखता रहा। जब-तब थील आँखें उठा कर पत्तियों के बीच से, जो सुनहरी धूप को एक विशाल निर्मल बर्तन की भाँति थामे हुए थीं, आकाश देखने का प्रयत्न करता।

"पापा!" बच्चे ने चीड़ पर खर-खर चढ़ती हुई भूरी गिलहरी की ओर इशारा करते हुए कहा—"पापा, क्या यही ईश्वर है?"

"धत रे पागल!" थील के मुँह से बस इतना ही निकला। पेड़ के तनों से कुछ छाल उस के पैरों के पास आ गिरी थी।

थील और तोबियास जब लौटे तब भी लेना फावड़ा चला रही थी। वह आधा खेत खोद चुकी थी।

बीच-बीच में जब भी कोई ट्रेन इधर से गुज़रती तोबीयास मुँह फाड़े उसे देखता रह जाता। ट्रेन देख कर जिस प्रकार की विचित्र मुद्राएँ वह बनाता, उन्हें देख कर उस की सौतेली माँ तक को हँसी आ जाती थी।

दोपहर का भोजन जिस में आलू और सूअर का भुना मांस था, गुमटी के अंदर खाया गया। लेना खूब प्रसन्न थी। यहाँ तक कि थील भी परिस्थितियों के आगे खुशी-खुशी झुकता प्रतीत होने लगा था। खाते समय वह अपनी पत्नी को अपने काम से संबंधित अनेक बातें बताता रहा—जैसे यही कि एक पटरी में छियालीस पेंच होते हैं।

खेत की खुदाई भोजन से पहले ही पूरी हो चुकी थी और तीसरे पहर लेना को उस में आलू बो देने थे। इस बार वह ज़िद पकड़ गयी कि नन्हें की देखभाल के लिए तोबीयास उस के पास ही रहे—और वह उसे साथ ले गयी।

"ज़रा ध्यान रखना इस का!" थील ने चिंतित स्वर में उसे पुकार कर कहा, "ज़रा ध्यान रखना कि तोबी पटरियों से दूर ही रहे।"

जवाब में लेना ने महज़ अपने कंधे उचका दिये।

सिगनल बज उठा। सिलेशियन एक्सप्रेस आ रही थी। थील अभी फाटक बंद कर के खड़ा हुआ ही था कि गाड़ी आने की घड़घड़ाहट सुनायी पड़ने लगी। कुछ ही सैकिंड बाद गाड़ी भी नज़र आने लगी। गाड़ी के ऊपर-ऊपर चल रहा था एक काला चोंगा, जो एक दूसरे का पीछा करते भाप के अनगिनत गुब्बार उगल रहा था। यह लो! एक-दो-तीन! वे मोमबत्ती-जैसे सीधे तीन दुग्ध-धवल फुहारे छूट पड़े—इंजन सीटी दे रहा था। एक के बाद एक छोटी, तीखी, डरावनी तिहरी सीटी।

"ड्राइवर ने ब्रेक मारा है," थील अपने आप बुदबुदाया। "पता नहीं क्या बात है!" और तभी ख़तरे की घंटी घनघना उठी, देर तक घनघनाती रही, अविराम अविश्रांत।

फाटक से हट कर वह आगे आ गया और पटरियों के बीच में देखने लगा। लाल झंडी अनायास उस के हाथों में आ कर फहरने लगी थी।

"हे भगवान, मेरी आँखें फूट गयी थीं? हे ईश्वर, क्या है वह? वहाँ—पटरियों के बीच!"

फेफड़े की पूरी ताकत लगा कर वह चीख़ पड़ा। मगर अब बहुत देर हो चुकी थी। एक काली-सी चीज़ गाड़ी के नीचे आ गयी थी और पहियों के बीच रबड़ की गेंद की मानिंद इधर से उधर उछल रही थी।

कुछ ही क्षणों में ब्रेकों की कर्कश चूँ-चर्र के साथ गाड़ी रुक गयी।

तुरंत ही एकांत प्रदेश कोलाहल से भर गया। कंडक्टर और ब्रेकमैन पीछे की ओर भागे। हर खिड़की से लोग झाँकने लगे। गाड़ी के पिछली ओर भीड़ जमा हो गयी थी, जो अब सिमट कर आगे आ रही थी।

थील हाँफ रहा था। सहारे के लिए कोई चीज़ पकड़ना उस के लिए ज़रूरी हो गया था कि कहीं वह हलाल किये हिरन की तरह ज़मीन पर ढेर न हो जाये।

यह क्या! क्या हाथ के इशारों से लोग सचमुच उसे बुला रहे हैं?

"नहीं!"

दुर्घटनास्थल से एक चीख सुनाई दी और फिर पशु की तरह कोई डकरा उठा। कौन था वह ? लेना ? आवाज़ तो उस-जैसी नहीं थी, फिर भी · · ·

पटरियों के बीच कोई लपका हुआ आ रहा था।

"झंडीवान !"

"क्या हुआ ?"

"दुर्घटना !"

झंडीवान की आँखों के विचित्र भाव को देख कर संदेशवाहक सहम गया। उस की टोपी एक ओर झुक गयी थी। ललौंहे बाल सीधे खड़े हो गये थे।

"अभी वह जिंदा है। हो सकता है बच ही जाये।"

जवाब में झंडीवान के गले से बस एक गों-गों सुनायी दी।

"जल्दी चलो, जल्दी !"

बड़ी कठिनाई से थील ने अपने को संयमित किया। उस की ढीली पड़ी मांस-पेशियाँ तन गयीं, वह सीधा खड़ा हो गया। चेहरा भाव-शून्य, मृत था।

वह उस आदमी के पीछे-पीछे दौड़ लिया। खिड़कियों से झाँकते पीले, विवर्ण चेहरों की ओर उस का ध्यान क़तई न था। यह चेहरा एक युवती का था, यह फुंदनेदार गोल टोपी लगाये एक ट्रैवलिंग सेल्समैन

का, यह एक नौजवान जोड़ा था जो शायद सुहागरात मनाने निकला था—पर इन सब का थील के लिए क्या महत्व था? पटरियों पर खड़खड़ाते, उछलते उन डिब्बों का उस से कोई संबंध नहीं रहा था। उस के कानों में बस लेना का विलाप गूंज रहा था।

उस की ग्राँखों के आगे पीले तिरमिरे तैरने लगे, असंख्य पीले तिरमिरे, जैसे पतंगे हों। चिहुँक कर वह रुक गया। पतंगों के उस नृत्य में से धीरे-धीरे स्पष्ट हुग्रा पीला, लुंज-पुंज रक्त से लथपथ, चोट से काला-पीला माथा, नीले होंठ ग्रौर उन से बहता गाढ़ा ख़ून।

तोबीयास !

थील की वाणी रुद्ध हो गयी थी। मुख धूल-जैसा सफ़ेद पड़ गया था। पागलों की तरह वह हँस रहा था। ग्राख़िर वह झुका। तोबीयास के शिथिल, मृत अवयव गोद में झूल रहे थे। उस ने लाल झंडी में तोबी को लपेट लिया ग्रौर चल पड़ा।

कहाँ ?

चारों ओर से ग्रावाज़ें आ रही थीं, "रेल के डाक्टर के पास, रेल के डाक्टर के पास ले चलो इसे।"

"हम वहाँ तक ले जायेंगे इसे" मालगार्ड बोला ग्रौर वह अपने डिब्बे में कोट और काग़ज-पत्र बिछा कर बिस्तर तैयार करने के लिए मुड़ा।

ग्ररे !

थील बच्चे को गोद से उतार ही नहीं रहा था। लोगों ने उस से बहुतेरा कहा, मगर बेकार। आख़िर मालगार्ड ने एक स्ट्रेचर उतरवाया और एक आदमी को हिदायत दी कि वह थील की सहायता के लिए रह जाये। समय निकला जा रहा था। गार्ड ने सीटी दे दी और लोगों ने खिड़कियों से सिक्कों की बौछार कर दी।

लेना पागलों की तरह रो रही थी। उस की दशा देख कर लोग कह रहे थे, "बेचारी! हाय बेचारी माँ!"

गार्ड की सीटी कई बार बजी, फिर इंजन ने सीटी दी और उस की चिमनी से हिसहिसाते हुए सफ़ेद बादल उबल पड़े। उस ने अपने लौह-स्नायु फैलाये, और कुछ ही सैकंडों में डाकगाड़ी धुएँ के झंडे लहराती दुगुने वेग से जंगल में अदृश्य हो गयी।

झंडीवान ने, जिस की मुद्रा अब बदल गयी थी, अधमरे बच्चे को स्ट्रेचर पर लिटा दिया।

तोबी का क्षत-विक्षत शरीर विकृत पड़ा था। रह-रह कर तार-तार हुई कमीज़ से चमकते उस के सूखे सीने में एक लंबी घरघराहट होती। छोटे-छोटे हाथ-पैर, जो जोड़ों के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर भी टूट गये थे, बड़ी ही अस्वाभाविक स्थिति में मुड़े-तुड़े पड़े थे। एक पैर की एड़ी मुड़ कर सामने आ गयी थी। बाँहें स्ट्रेचर से झूल रही थीं।

लेना बराबर रोये जा रही थी। उद्धतता का अब कोई चिन्ह उस में बाक़ी न था। बार-बार वह यही कह रही थी कि इस दुर्घटना में उस का कोई क़सूर नहीं था।

लगता था कि थील का ध्यान उस की बातों की ओर बिल्कुल न था। एक भयावह चिंतातुर भाव से वह तो बस टकटकी बाँधे बच्चे को देखे जा रहा था।

वातावरण में एक नीरवता व्याप्त हो गयी थी, मृत्यु-जैसी नीरवता। चमकदार रोड़ों पर टिकी काली पटरियाँ गरम हो गयी थीं। दोपहरी ने हवा अवरुद्ध कर दी थी और जंगल स्तब्ध, अचल था—मानो पत्थर में तराश दिया गया हो।

दबे घुटे स्वर में दोनों आदमियों ने परामर्श किया। फ्रीड्रिक्सहागन जल्दी से जल्दी पहुँचने का तरीक़ा यह था कि ब्रेसलाओ की दिशा में पास के स्टेशन तक वापस पहुँचा जाये, क्योंकि अगली गाड़ी फ्रीड्रिक्सहागन के समीप वाले स्टेशन पर नहीं रुकती थी।

थील शायद यह सोच रहा था कि उस का जाना उचित होगा या नहीं। उस समय वहाँ ऐसा कोई न था जो झंडीवान की ड्यूटी को समझता हो, इस लिए उस ने ख़ामोशी से अपनी पत्नी को इशारा किया कि एक ओर से स्ट्रेचर को वह थाम ले। हालाँकि छोटे बच्चे को छोड़ जाने से वह चिंतातुर थी, मगर इनकार करने की हिम्मत उसे न हुई।

अपने हल्क़े की हद तक उन के साथ थील भी गया और फिर वहाँ पत्थर हो कर उन्हें बहुत देर तक जाते देखता रहा। सहसा उस ने इतने ज़ोर से माथे पर हाथ मारा कि उस की आवाज़ दूर तक गूंज गयी। उस ने सोचा शायद इस प्रकार उस की नींद खुल जाये और यह सब कल-जैसा सपना ही हो कर रह जाये। मगर सपना कहाँ था यह! डग-मगाते पाँवों वह गुमटी में पहुँचा और धड़ाम से औंधे मुँह ज़मीन पर

गिर पड़ा। टोपी उधर कोने में जा गिरी। उस की घड़ी, जिसे वह बड़ी एहतियात से रखता था, जेब से गिर गयी और उस का शीशा फूट गया। उस की गरदन जैसे किसी लोहे के पंजे ने जकड़ ली थी। वह कराह रहा था, मगर हिल न सकता था। उस का माथा ठंडा पड़ गया था और गला सूख गया था।

सिगनल की घंटी ने उसे जगाया। घंटी की उन बार-बार आ रही तिहरी आवाज़ों के प्रभाव से उस का दौरा हटा। थील अब उठ कर ज्यों-त्यों अपनी ड्यूटी बजाने योग्य हो गया था, हालाँकि उस के पाँव सीसे-जैसे भारी हो गये थे और काली पटरियाँ उसे अपने सिर को चारों ओर से घेरे किसी पहिये के अरे-जैसी लग रही थीं। फिर भी वह अब थोड़ी देर खड़ा होने क़ाबिल हो गया था।

गाड़ी आ रही थी। इस गाड़ी में ज़रूर ही तोबीयास होगा। ज्यों-ज्यों गाड़ी नज़दीक आती गयी, थील की आँखों के आगे सब कुछ धुँधलाता गया। अन्त में ख़ून से लथपथ लुंजपुंज तोबी के शरीर के अतिरिक्त उस की आँखों के आगे कुछ न रह गया। और उस के बाद पूर्ण अंधकार।

थोड़ी देर बाद उस की बेहोशी टूटी, तो देखा कि वह चिलचिलाती धूप में फाटक के पास पड़ा है। कपड़े धूल में लिथड़ गये थे, उठ कर उन्हें झाड़ा। जो धूल मुँह में भर गयी थी, उसे थूका। अब उस का सिर ज़रा हल्का था और वह शांत हो कर सोच सकता था।

गुमटी में जा कर उस ने फ़र्श पर पड़ी अपनी घड़ी उठायी और

उसे मेज़ पर रख दिया। घड़ी बंद नहीं हुई थी। दो घंटे तक वह सेकंड-

सेकंड और मिनट-मिनट तक गिनता रहा और सोचता रहा कि तोबीयास किस स्थिति में होगा—अब लेना उसे ले कर पहुँची है, अब वह डाक्टर के सामने खड़ी है, डाक्टर ने बच्चे को अच्छी तरह देखा है और सिर हिला दिया है।

"हालत ख़राब क्या, बहुत ख़राब है—फिर भी कौन जाने, बच ही जाये!"

वह और अच्छी तरह जाँच करता है।

"नहीं", डाक्टर कहता है, "नहीं, यह तो ख़त्म हो चुका।"

"ख़त्म हो चुका, ख़त्म हो चुका!" झंडीवान कराहा। लेकिन फिर वह उठ खड़ा हुआ। अनजाने में मुठ्ठियाँ भिच गयीं, आँखें ऊपर छत पर टिक गयीं और वह इस ज़ोर से चीख़ा मानो अपनी आवाज़ से कमरे की दीवारों को फाड़ देगा, "उसे ज़िंदा रहना चाहिए, रहना ही चाहिए। मैं कहता हूँ, रहना ही चाहिए!"

उस ने गुमटी का द्वार खोल दिया—शाम की लाली चपल चरणों से कमरे में दौड़ आयी। वह द्वार में हक्का-बक्का-सा खड़ा रह गया। फिर अचानक बाँहें फैला कर सड़क के बीचोंबीच भाग चला, मानो उधर से आने वाली रोशनी को रोकने जा रहा हो। आँखें पूरी खुली होने पर भी उसे जैसे दिखायी कुछ नहीं दे पा रहा था। मानो किसी के लिए रास्ता छोड़ रहा हो—इस भाव से वह एक क़दम पीछे हटा और दाँत भींचे ही भींचे जाने क्या-क्या बड़बड़ाने लगा।

"सुनो। मत जाओ! सुनो, सुनो! मत जाओ! यहीं रहो। उसे मुझे वापस कर दो। उस के बदन पर चोट के नीले निशान हैं। हाँ, हाँ

ठीक है। मैं लेना को भी मार-मार कर नीला कर दूंगा। सुनती हो ? ठहरो ! उसे मुझे लौटा दो !"

जैसे कि कोई उस की बग़ल से हो कर निकल गया हो—इस तरह वह उस अदृश्य के पीछे-पीछे चलने लगा।

"मिन्ना, मिन्ना !" उस की आवाज़ बच्चे-जैसी रुआँसी हो रही थी—"मिन्ना, सुनो ! उसे वापस लौटा दो। मैं"···वह लपका, मानो किसी तेज़ जाते हुए को पकड़ता हो—"मेरी छोटी-सी दुल्हन—हाँ, हाँ—और मैं—मैं उसे और मारूँगा—मार-मार कर नीली कर दूंगा—हाँ, नीली कर डालूंगा—तुम देखना तो—मैं उस कुल्हाड़ी से—रसोई में जो कुल्हाड़ी रखी है उसी से मार डालूंगा। एकदम जान निकाल लूंगा—हाँ कुल्हाड़ी से—गाढ़ा-गाढ़ा ख़ून !"

उस के होंटों पर झाग आ गया था और उस की पथरायी पुतलियाँ अनवरत घूम रही थीं।

साँझ की भीनी-भीनी हवा जंगल में बह रही थी। पश्चिमाकाश में गुलाबी बादलों का एक गुच्छा लटक रहा था।

वह लगभग सौ क़दम तक उस अदृश्य वस्तु के पीछे-पीछे गया और फिर इस प्रकार ठिठक गया कि जैसे उस की हिम्मत ने जवाब दे दिया हो। भय से सहमी आँखें लिये और बाँहें फैलाये वह याचना कर रहा था, गिड़गिड़ा रहा था। फिर जैसे किसी दूर जाते को देख रहा हो—इस भाव से वह माथे पर हाथ रखे आँखों पर ज़ोर डाल-डाल कर देखता रहा। अंत में उस की गरदन लटक गयी, तना चेहरा दयनीय हो उठा। अपने को घसीटता हुआ वह लौट पड़ा।

सूर्य-रश्मियाँ जंगल पर अपनी अंतिम आभा बिखेर कर लुप्त हो गयीं। चीड़ के तने पीली, जर्जर हड्डियों की भाँति लग रहे थे, जिन की चोटियाँ भूरी, काली मिट्टी की तह-जैसी प्रतीत हो रही थीं। किसी कठफोड़वे की ठक-ठक वातावरण की शांति को भंग कर रही थी। छोर वाले अलसाये गुलाबी बादल के ऊपर इस्पाती नीला आकाश था। सीलन भरी हवा और ठंडी हो गयी थी, मानो किसी तहख़ाने से आ रही हो।

झंडीवान को कँपकँपी चढ़ गयी। उसे सब कुछ नया-नया और अपरिचित लग रहा था। एक गिलहरी फुदकती हुई सड़क पार कर गयी। थील के मन में आया कि उसे भगवान का स्मरण करना चाहिए। मगर क्यों? "ईश्वर पटरियों के बीच फुदक रहा है, ईश्वर पटरियों के बीच फुदक रहा है," उस के मुँह से कई बार यही निकला, मानो वह इस से संबंधित कोई बात याद करना चाहता हो। सहसा उस ने अपने आप को रोका। उस के मस्तिष्क में कोई चीज़ कौंध गयी—हे भगवान! यह तो पागलपन है! अन्य सब कुछ भूल कर अब वह इस नये शत्रु से जूझने लगा। उस ने अपने विचारों को व्यवस्थित करना चाहा। मगर बेकार। विचार अपनी मर्ज़ी से आते जाते, और मँडराते, और फिर भटक कर ग़ायब हो जाते। सहसा वह अपने को बेहूदी से बेहूदी कल्पनाओं में उलझा हुआ पाता और अपनी विवशता का भान होते ही काँप उठता।

पास के भुर्ज कुंज से किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनायी पड़ने लगी। पागलपने के लिए यह हरी झंडी थी। क़रीब-क़रीब अपनी इच्छा के प्रतिकूल उसे उस स्थल की ओर लपकना पड़ा जहाँ सब का

बिसराया हुआ छोटा बच्चा बच्चा-गाड़ी के नंगे फ़र्श पर रोता हुआ पड़ा लातें फेंक रहा था।

क्या करना चाहता था थील ? किस इरादे से वह बच्चे के पास आया था ? ये प्रश्न विचारों और भावनाओं के भँवर में डूब गये थे।

ईश्वर पटरियों के बीच फुदक रहा है—अब समझा वह। तोबीयास—उस ने हत्या कर दी उस की—लेना ने—तोबीयास को उसी के हाथ सौंपा था थील ने। "सौतेली माँ ! राक्षसी !" अपने भिंचे दाँतों के बीच से वह हिसहिसाया—"और उस का अपना यह पिल्ला जीवित है।"

एक लाल धुंध उस की चेतना पर छा गया। उस में से किसी बच्चे की दो आँखें झाँक रही थीं। अपनी अँगुलियों के बीच उसे कुछ नरम मांस-जैसा महसूस हुआ। किसी के गले से खरखराने की, फटे गले से चीख़ने के साथ सीटी-जैसी आवाजें उसे सुनायी देने लगीं—कहाँ से आ रही थीं ये आवाज़ें ?

तभी उस के मस्तिष्क पर लाख की गरम बूँदों सरीखा कुछ आ पड़ा और उस का व्यामोह दूर हो गया। चेतना लौटने पर सिगनल की अंतिम गूँज उसे सुनायी दी और तत्क्षण उसे भान हुआ कि वह क्या कर डालने वाला था। ऐंठते, बिलबिलाते शिशु के गले पर से उस ने अपनी पकड़ ढीली की तो बच्चे ने साँस के लिए मुँह फाड़ दिया। फिर वह खाँसने और चीख़ने लगा।

"ज़िंदा तो है। ईश्वर का शुक्र है, यह जीवित है।"

बच्चे को वहीं छोड़ कर वह फाटक की ओर भागा। दूर धुएँ के

बादल उठते और हवा उन्हें धरती की ओर ढकेल देती। किसी दैत्य की रुक-रुक कर कष्ट से आती हुई साँस की भाँति इंजन का हाँफना सुनाई पड़ रहा था।

रेल-मार्ग एक शीतल धुँधलके से आच्छादित था। थोड़ी देर बाद धुएँ के बादल फटे तो थील नें पहचाना कि वह मालगाड़ी थी जो खुले ख़ाली डिब्बों और बारहमासी मज़दूरों को ले कर लौट रही थी। यह गाड़ी हर स्टेशन पर रुक कर मज़दूरों को चढ़ाती-उतारती थी।

थील की गुमटी से काफ़ी परे ड्राइवर ने ब्रेक लगाये और गाड़ी एक लंबी सीटी दे कर ज़ोर से खड़खड़ाती, झनझनाती रुक गयी।

अलग-अलग डिब्बों में लगभग पचास स्त्री-पुरुष थे। लगभग सब खड़े हो गये। कुछ पुरुषों के सिर नंगे थे। एक रहस्यमय गंभीरता उन पर व्याप्त थी। झंडीवान को देख कर, उन में खुसुर-पुसुर होने लगी थी। बूढ़ों ने अपने पीले दाँतों में दबे पाइप निकाल कर आदरपूर्वक अपने हाथों में ले लिये थे। बीच-बीच में कोई औरत नाक साफ़ करने के लिए मुँह फेर लेती थी।

गार्ड उतर कर थील की तरफ़ बढ़ा। बारहमासियों ने उसे संजीदगी से झंडीवान से हाथ मिलाते और फिर थील को छोटे-छोटे सैनिकों की भाँति तने क़दमों से गाड़ी के पीछे की ओर जाते देखा। हालाँकि सभी उस के परिचित थे, मगर किसी की हिम्मत न हुई कि उस से बोलता।

अंत वाले डिब्बे से वे नन्हें तोबी को उठा रहे थे।

वह मर चुका था।

पीछे-पीछे थी लेना। उस का चेहरा नीलापन लिये सफ़ेद हो गया था, आँखों के नीचे भूरे-भूरे छल्ले पड़ गये थे।

थील ने उस की ओर नहीं देखा। परंतु वह अपने पति की हालत देख कर सहम गयी थी। थील के गाल धँस गये थे, बरौनियों और दाढ़ी पर धूल की तह जम गयी थी और बाल ज्यादा सफ़ेद हो गये प्रतीत होते थे। सारे चेहरे पर आँसुओं के निशान और आँखों में एक ऐसी अस्थिर ज्योति कि जिसे देख कर वह काँप गयी।

शव को घर तक ले जाने के लिए स्ट्रेचर लाया गया।

थोड़ी देर तक बड़ी भयावह शान्ति व्याप्त रही। थील विचारों की अंधी घाटियों में खो गया था। अँधेरा और गहरा हो आया था। तभी हिरनों का एक झुंड पुश्ता पार करने लगा। पटरियों के बीच खड़ा हो कर झुंड का सरदार अपनी लचीली गरदन घुमा कर देख ही रहा था कि मामला क्या है कि इंजन ने सीटी दी और सारा झुंड पलक झपकते छू-मंतर हो गया।

ट्रेन चलने को ही थी कि थील बेहोश हो कर गिर पड़ा। गाड़ी ज्यों की त्यों खड़ी रही और लोग सलाह करने लगे कि अब क्या किया जाये। बहुतेरा उपचार किया पर झंडीवान होश में नहीं आ रहा था। इसलिए लोगों ने यही तय किया कि बच्चे का शव तो कुछ देर के लिए गुमटी में रख दिया जाये और थील को स्ट्रेचर पर लाद कर घर पहुँचाया जाये। दो आदमी स्ट्रेचर ले चले, जिन के पीछे लेना बच्चा-गाड़ी को रेत में धकेलती ला रही थी। वह सारे रास्ते सुबकियाँ भरती रही और आँसू उस के गालों पर हो कर बहते रहे।

नीलारुण गोल चाँद चीड़ों के बीच से उगने लगा था। ज्यों-ज्यों वह ऊपर चढ़ा, पीला हो कर छोटा होता गया और अंत में किसी दोलायमान दीपक की भाँति आकाश में ऊँचे टँग गया। पीली चाँदनी जंगल पर छिटकी थी और पत्तियों से छन-छन कर उन सब के चेहरों को नीलाभ श्वेत बना रही थी। फुरती और सावधानी से वे बढ़ रहे थे—अब घने उगे जवान पेड़ों के बीच से, अब ऊँचे-ऊँचे दरख़्तों के बीच नन्हीं-नन्हीं पौध के ऐसे विशाल टुकड़ों के बीच से, जहाँ प्रकाश गहरे काले प्यालों में लबालब भरा प्रतीत होता था।

रह-रह कर बेहोश थील के गले से घरघराहट की आवाज़ आती और वह बड़बड़ा उठता। कई बार उस ने आँखें बंद किये ही मुट्ठियाँ भींच कर उठने का प्रयत्न भी किया। असली कठिनाई हुई उसे नदी के पार ले जाने में। लेना और बच्चे को पार उतारने के लिए नाव को दूसरा चक्कर लगाना पड़ा।

नदी पार जब वे गाँव के ढाल पर चढ़ने लगे, तो पहले कुछ थोड़े से लोग मिले, फिर उन से ख़बर पा कर सारा गाँव टूट पड़ा।

लोगों को सारा मामला बताते-बताते लेना फिर नये सिरे से रोने लगी।

थील को तंग सीढ़ियों से ले जा कर बिस्तर पर लिटाने में थोड़ी दिक़्क़त हुई। फिर दोनों आदमी तोबी का शव लाने के लिए तुरंत ही लौट पड़े।

दो-चार अनुभवी बूढ़ों ने राय दी कि थील के सिर पर ठंडी पट्टियाँ रखी जायें। लेना बड़े मनोयोग से बरफ़ीले पानी में भिगो-भिगो कर

बेहोश थील के माथे पर पट्टियाँ रखने लगी। वह बड़ी ग्रातुरता से उस की साँसों का चलना देख रही थी। धीरे-धीरे साँसें नियमित होने लगीं ग्रौर उस की हालत सुधरती दिखायी पड़ने लगी।

लेना बहुत थक गयी थी। उस ने चाहा कि वह एक झपकी ले ले। मगर बेकार। आँखें खुली रखती चाहे बंद, दिन भर की घटनाएँ उस के सामने बराबर चक्कर काट रही थीं। छोटा बच्चा सो गया था। ग्रपनी आदत के विरुद्ध लेना ने ग्राज उस की ग्रोर अधिक ध्यान नहीं दिया था। ग्राज वह बिल्कुल बदल गयी थी पहले के ग्रक्खड़पन का कहीं निशान भी बाक़ी न था। निष्प्रभ और पसीने से तर चेहरा लिये उस का पति निद्रा में भी उस पर छाया हुआ था।

बादल के एक टुकड़े ने चाँद को ढक लिया ग्रौर कमरा ग्रँधेरे में डूब गया। लेना को ग्रपने पति की गहरी साँसों के अतिरिक्त ग्रौर कुछ सुनायी नहीं पड़ रहा था। ग्रँधेरे में उसे डर लगने लगा। उस का मन हुग्रा कि उठ कर रोशनी कर ले, मगर जब उठने को हुई तो उस के ग्रंग-ग्रंग को जैसे किसी भारी बोझ ने दबोच लिया, पलकें झुक गयीं। उसे नींद ग्रा गयी।

तोबी का शव लिये जब दोनों बारहमासी लौटे तो बाहर वाला दरवाज़ा पूरा खुला था। यह देख कर उन्हें हैरानी हुई, लेकिन जब ऊपर पहुँचे तो देखा कि ज़ीने के ऊपर वाला द्वार भी खुला था। उन्होंने लेना को पुकारा, लेकिन कोई जवाब न मिला। माचिस जलायी तो एक वीभत्स दृश्य दिखायी पड़ा।

 ख़ून !

लेना ख़ून से लथपथ पड़ी थी, चेहरा पहचान में नहीं आ रहा था।

"उस ने अपनी पत्नी को मार डाला, अपनी पत्नी को मार डाला उस ने!"

वे बदहोश हो कर इधर-उधर दौड़ने लगे। आनन-फ़ानन में पड़ोसी जमा हो गये। सहसा उन में से एक पालने से टकरा गया।

"हे भगवान!" वह एकदम सिकुड़ कर पीला पड़ गया, आँखें भय से फटी जा रही थीं। बच्चे की गरदन किसी ने काट डाली थी।

झंडीवान का कहीं पता न था। सारी रात उस की खोज हुई, मगर बेकार। अगली सुबह जब दूसरा गुमटिहा बदली पर आया तो उस ने थील को पटरियों के बीच ठीक उस स्थान पर देखा जहाँ तोबी रेल के नीचे आ गया था। उस की गोद में एक मुसीतुसी भूरी ऊनी टोपी थी, जिसे वह ऐसे चुमकार-दुलार रहा था जैसे कि वह टोपी न हो कर कोई नन्हा-मुन्ना बालक हो। उस ने थील को कई बार पुकारा, बार-बार उस से सवाल किये—मगर उस की चुप्पी न टूटी। शीघ्र ही उसे पता चल गया कि थील पागल हो चुका है।

ब्लाक सिगनेलर को ख़बर की गयी। सहायता के लिए तार खटखटाये गये। थील को पटरियों के बीच से हटाने के लिए तरह-तरह से बहलाया-फुसलाया जाने लगा। मगर वह टस से मस न हुआ। आख़िर जो एक्सप्रेस गाड़ी उस समय आने वाली थी उसे रोका गया। बुरी तरह रोते-घिघियाते थील को सब ने मिलजुल कर बलपूर्वक वहाँ से हटाया। उस के हाथ-पैर बाँधने ज़रूरी हो गये थे। पुलिस का एक

सिपाही घटनास्थल पर आ गया था। वही अपनी निगरानी में थील को बर्लीन ले गया। बर्लीन जेल में उस की जाँच हुई, जिस के बाद उसे एक पागलों के ख़ैराती अस्पताल में भेज दिया गया। मगर वह मुसीतुसी भूरी ऊनी टोपी फिर कभी उस के हाथ से न छूटी और वह बराबर ईर्ष्यापूर्ण स्नेह से उस की चौकसी करता रहा।

महत्वपूर्ण जीवन तिथियाँ

१८६२ — १५ नवम्बर को श्लेज़ियन-प्रान्त के ओबर-ज़ाल्त्सब्रुन ग्राम में गेरहर्त हाउप्तमन का जन्म।

१८७४-७८ ब्रेसलाउ की त्सि्वंगर पाठशाला में अध्ययन।

१८७८-७९ श्त्रीगाउ ज़िले की लोनिख़ ज़मींदारी में कृषि-प्रशिक्षा। अपनी प्रथम कविताएँ लिखीं।

१८८०-८२ ब्रेसलाउ में मूर्ति-कला का अध्ययन।

१८८२-८३ येना विश्वविद्यालय में एक सत्र तक इतिहास का अध्ययन।

१८८३-८४ भूमध्यसागर की यात्रा। रोम में मूर्तिकार के रूप में।

१८८४ — ग्रीष्म और शरद ड्रेसदन में बितायी।

१८८४-८५ दो सत्र बर्लीन विश्वविद्यालय में विद्यार्थी।

१८८५ — ५ मई को मारी थीनमन से विवाह। र्‌यूगन और हिदनज़े द्वीप की यात्रा।

१८८५-८९ बर्लीन के पास एर्ख़नर में निवास।

१८८९ — २०अक्तूबर को बर्लीन में उन के 'सूर्योदय से पूर्व' नाटक का प्रथम प्रदर्शन।

१८९१ — अप्रैल में श्लेज़ियन में जुलाहों के ज़िले की यात्रा।

१८९४ — जनवरी से मई तक अमरीका की प्रथम यात्रा।

१९०१ १० अगस्त श्लेज़ियन प्रान्त के अग्नेतनटॉर्फ़ ग्राम में 'वीज़न-श्ताइन' मकान में प्रवेश ।

१९०४ पहली पत्नी का त्याग ।
१८ सितम्बर को मार्गरेते मार्शल्ख से विवाह ।

१९०५ ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय से ऑनरेरी डाक्टर की उपाधि प्राप्त ।
इंगलैंड की यात्रा ।

१९०७ मार्च से मई तक यूनान की यात्रा ।

१९१२ नोबेल पुरस्कार प्राप्त ।

१९२४ शान्ति श्रेणी का पूर-ले-मेरीत प्राप्त ।

१९२८ प्रॉइसन की कवि-अकादमी के सदस्य बने ।

१९३२ फरवरी से मार्च तक अमरीका की दूसरी यात्रा ।
२८ अगस्त को फ्रखफ़ुर्त नगर का ग्योथे पुरस्कार प्राप्त ।

१९४६ ६ जून को अग्नेतनटॉर्फ़ मे अपने मकान में मृत्यु ।